TEXT CUT WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_182092
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81.092 Accession No. H2584

Author P18Sa

Title पंडित, प्रकाश (सं)

This book should be returned on or before the date last marked below. फाल्गुन 1958

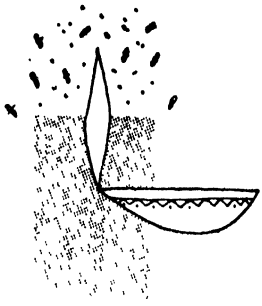

आत्माराम एन्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

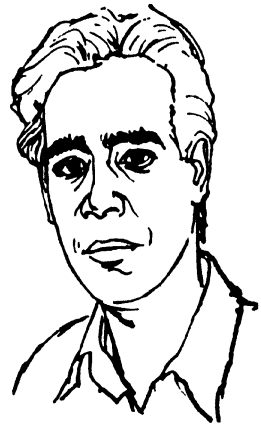

सरदार जाफ़री

और उनकी शायरी

संपादक : प्रकाश पण्डित

राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली

प्रथम संस्करण
मार्च, १९५८

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

जीवनी	...	५—२१
चयन	...	२३—९५
नज़में—		
१. पत्थर की दीवार	...	२५
२. बम्बई	...	३३
३. मेरे ख़्वाब	...	४०
४. अवध की ख़ाके-हसीं	...	४६
५. तुम्हारी आंखें	...	५४
६. नींद	...	५७
७. अनाज	...	६१
८. शादी का दिन	...	६३
९. एक साल	...	६४
१०. भूखी मां भूखा बच्चा	...	७०
११. शाहराहे हयात	...	७२
१२. ख़ूनी हाथ	...	७५
१३. हुस्ने-कश्मीर	...	७७
१४. एक याद	...	७९

१५. हुस्ने नातमाम ... ८१
१६. जेल की रात ... ८३
१७. मेरा सफ़र ... ८४
कुछ ग़ज़लें और कुछ शेर .. ८७

नया चश्मा है पत्थर के शिगाफ़ों से उबलने को।
ज़माना किस क़दर बेताब है करवट बदलने को॥

जीवनी

ईसा पूर्व ३४७ में यूनान के सर्वविख्यात वैज्ञानिक और दार्शनिक अफ़लातून (Plato) ने अपने काल्पनिक प्रजातंत्र राज्य में से कवियों को इसलिए निकाल दिया था कि उसके विचार में 'कविता वास्तविकता की प्रतिकृति है और वह भी तीसरी श्रेणी की। क्योंकि असल वास्तविकता की प्रतिकृति यह संसार है और उसकी प्रतिकृति यह कविता।'

उठारहवीं शताब्दि के उर्दू के सर्वप्रथम जन-कवि 'नज़ीर' अकबराबादी को बाज़ारू और अश्लील शायर कहकर १९वीं शताब्दि के प्रसिद्ध उर्दू साहित्यकार मोहम्मद हुसैन 'आज़ाद' ने उसे शायरी के सिंहासन पर बिठाने से इन्कार कर दिया था।

और इस बीसवीं सदी में भी आज से दस-बारह वर्ष पूर्व उर्दू के प्रसिद्ध व्यंग्य-लेखक कन्हैयालाल कपूर ने अपने एक हास्य-व्यंग्य लेख में स्वर्गीय 'हाली' (उर्दू के प्रथम सुधारवादी शायर और लेखक) को नये सिरे से जीवित दिखाकर उससे प्रगतिशील शायरों का परिचय कराते हुए लिखा था कि जब 'मजाज़' लखनवी और सरदार जाफ़री ने (कपूर ने इनके उपनाम बिगाड़कर लिखे थे) उस भरी महफ़िल में प्रवेश किया तो उनके कंधों पर लाल झंडे थे और वे बाक़ायदा मार्च

करते और गाते आ रहे थे :

'मज़दूर हैं हम, मज़दूर हैं हम !'

कपूर के कथनानुसार 'हाली' ने बड़े आश्चर्य से उन नवागन्तुकों की ओर देखा और बौखला कर कहा "आप अगर मज़दूर हैं तो जाइये, जाकर कहीं मज़दूरी कीजिये, यहां शायरों की महफ़िल में आपका क्या काम !"

लेकिन होता यह है कि स्वयं अफ़लातून का शिष्य अरस्तू (Aristotle) अपने गुरु के काव्य-सम्बन्धी विचारों की अवहेलना करता है और कविता या साहित्य को मानव-जीवन को समझने और उसे सुन्दर बनाने के लिए आवश्यक बल्कि अनिवार्य सिद्ध करता है।

उन्नीसवीं सदी में जिस शायर को मेले-ठेलों, त्योहारों और घरेलू घटनाओं को सीधे-सादे ढंग से व्यक्त करने के अपराध में अश्लील और बाज़ारू कहा गया और यह भविष्य-वाणी हुई कि उसकी शायरी को कभी अमरत्व प्राप्त न होगा, आज उसी 'नज़ीर' अकबराबादी की शायरी के बिना उर्दू साहित्य का इतिहास अपूर्ण नज़र आता है और हमें उसे अपना पूर्वज शायर कहकर बड़े गौरव का अनुभव होता है। बल्कि डाक्टर फ़ेलन ऐसा अंग्रेज़ आलोचक तो यहां तक कह देता है कि " 'नज़ीर' ही उर्दू का वह एकमात्र शायर है (अपने काल का) जिसकी शायरी योरुप वालों के काव्य-स्तर के अनुसार सच्ची शायरी है।"

और गुस्ताख़ी मुआफ़, कन्हैयालाल कपूर के जीवन-काल

में ही, बल्कि उसकी राय (व्यंग्य ही सही) के केवल दस-बारह वर्ष बाद, सरदार जाफ़री शेरो-अदब की किसी महफ़िल से निकाले जाने की बजाय उस महफ़िल का जीवन बल्कि आत्मा नज़र आता है। और ऊपर के उदाहरण इस धारणा को सुदृढ़ करने में हमारी सहायता करते हैं कि शायर कोई अलौकिक जीव नहीं होता कि जिस पर जीवन के परिवर्तनशील मूल्यों का कोई प्रभाव ही नहीं होता और जो अपने काल की परिस्थितियों से दामन बचाकर जीवित रह सके। बल्कि शायर का दिल बड़ा भावुक और उसकी नज़र बड़ी दूरगामी होती है। वह केवल अतीत और वर्तमान ही की ओर नहीं देखता, उसकी दृष्टि भविष्य पर भी पड़ती है और मानव-विकास का बोध उसे मनुष्य के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए तत्पर और संघर्षशील करता है। लेकिन उसके पास परिवर्तन लाने का साधन चूंकि शायरी होता है इसलिए स्वयं सरदार जाफ़री के कथनानुसार "वह न तो कुल्हाड़ी की तरह पेड़ काट सकता है और न इन्सानी हाथों की तरह मिट्टी से प्याले बना सकता है। वह पत्थर से बुत नहीं तराशता, बल्कि जज़्बात और एहसासात की नई-नई तस्वीरें बनाता है। वह पहले इन्सान के जज़्बात पर असर-अंदाज़ होता है और इस तरह उसमें दाख़ली (अंतरंग) तबदीली पैदा करता है और फिर उस इन्सान के ज़रिये से माहौल (वातावरण) और समाज को तबदील करता है।"

शायर और शायरी की इस परिभाषा को यदि ठीक मान

लिया जाए तो सरदार जाफ़री और उसकी शायरी दोनों इस पर बिल्कुल पूरे उतरते हैं। मानव-विकास को समझने, जीवन के मिटते हुए मूल्यों का भेद पा लेने, प्रगतिशील शक्तियों से अपना सीधा सम्बन्ध स्थापित करने और अपनी कलात्मक ज़िम्मेदारी का पूरी तरह अनुभव कर लेने के बाद जब उसने शायरी के मैदान में क़दम रखा और जो कुछ उसे कहना था बड़े स्पष्ट स्वर में कहने लगा तो शायरी की रूढ़िगत परम्पराओं के उपासकों का बौखला उठना ठीक उसी प्रकार आवश्यक था जिस प्रकार कि 'आज़ाद' को 'नज़ीर' के यहां बाज़ारूपन और अश्लीलता नज़र आई थी। लेकिन आज चूंकि जीवन की गति अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी से कहीं तेज़ है और मानव-बोध पहले से कहीं आगे निकल चुका है, इसलिए सरदार जाफ़री को और उसी की तरह सोचने वाले अन्य प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी शायरों को अपनी बात ग्राह्य और प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी, और चूंकि सरदार जाफ़री का राजनैतिक बोध और काव्य-उद्भावना बड़े संतुलित ढंग से एक दूसरे से घुल-मिल चुके हैं और उसे घटनाओं और परिस्थितियों को शायरी के सांचे में ढालकर दिल में उतारने की क्षमता प्राप्त है, इसलिए हम देखते हैं कि जिन विचारों को वह नज़्म करता है वे सीधे हमारे मस्तिष्क को छूते हैं और हमारे भीतर जो स्थायी चुभन और तड़प, वेग और प्रेरणा उत्पन्न करते हैं, उनसे न केवल हमें जीवन को समझने में सहायता मिलती है बल्कि हमारे भीतर बेहतर

भविष्य के संग्राम में योग देने की भावना जाग उठती है।

आधुनिक उर्दू शायरी का यह साहसी शायर, जो शान्ति और भाईचारे के प्रचार और परतंत्रता, युद्ध और साम्राजी हथकंडों पर कुठाराघात करने के अपराध में परतंत्र भारत में भी कई बार जेल जा चुका है और स्वतंत्र भारत में भी; २९ नवम्बर, १९१३ को बलरामपुर, ज़िला गोंडा (अवध) में पैदा हुआ। घर का वातावरण उत्तर-प्रदेश के मध्यवर्गीय मुस्लिम घरानों की तरह खालिस मज़हबी था, और चूँकि ऐसे घरानों में 'अनीस' के मर्सियों को वही महत्व प्राप्त है जो हिन्दू घरानों में गीता के श्लोकों और रामायण की चौपाइयों को, अतएव अली सरदार जाफ़री पर भी घर के मज़हबी और इस नाते अदबी (साहित्यिक) वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ा और अपनी छोटी-सी आयु में ही उसने मर्सिये (शोक-काव्य) कहने शुरू कर दिये और १९३३ ई० तक बराबर मर्सिये कहता रहा। उसका उन दिनों का एक शेर देखिये :

अर्श तक ओस के क़तरों की चमक जाने लगी।
चली ठंडी जो हवा तारों को नींद आने लगी॥

लेकिन बलरामपुर से हाई स्कूल की परीक्षा पास करके जब वह उच्च शिक्षा के लिए मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ़ पहुँचा तो वहाँ उसे अख़्तर हुसैन रायपुरी, सिब्ते-हसन, जज़्बी, मजाज़, जां निसार 'अख़्तर' और ख़्वाजा अहमद अब्बास ऐसे लेखक साथी मिले और वह विद्यार्थियों के आन्दोलनों में भाग लेने लगा। फिर विद्यार्थियों की एक हड़ताल (वायसराय

की एग्ज़ैक्टिव कौंसल के सदस्यों के विरुद्ध जो अलीगढ़ आया करते थे) कराने के सम्बन्ध में यूनीवर्सिटी से निकाल दिया गया तो उसकी शायरी का रुख़ आप ही आप मर्सियों से राजनैतिक नज़्मों की ओर मुड़ गया। एंग्लो-एरेबिक कालेज देहली से बी० ए० और लखनऊ विश्वविद्यालय से एम० ए० करने के बाद जब वह बम्बई पहुँचा और कम्यूनिस्ट पार्टी का सक्रिय सदस्य बना और फिर उसे बार-बार जेल-यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो उसकी शायरी ने ऐसे पर-पुर्ज़े निकाले और उसकी ख्याति का वह युग प्रारंभ हुआ कि प्रतिक्रियावादियों की कौन कहे स्वयं प्रगतिशील लेखक भी दंग रह गये।

उसके समस्त कविता-संग्रहों 'परवाज़', 'नई दुनिया को सलाम', 'खून की लकीर', 'अमन का सितारा', 'एशिया जाग उठा' और 'पत्थर की दीवार' का अध्ययन करने से जो चीज़ बड़े स्पष्ट रूप में हमारे सामने आती है और जिससे हमें सरदार की कलात्मक महानता का पता चलता है, वह यह है कि उसके समस्त विचारों का केन्द्र मनुष्य-मात्र है और उसे मानवता के भव्य भविष्य पर पूरा-पूरा भरोसा है। ऐतिहासिक बोध और सामाजिक अनुभवों से उसने यह भेद पा लिया है कि संसार में व्यक्तियों और वर्गों की पराजय तो हो सकती है और होगी, लेकिन मनुष्य अजेय है। विश्व-इतिहास में ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जब मनुष्य की पराजय हुई हो; और चूंकि उसका परिश्रम उसके अपने बोध ही का नहीं, बहुत हद तक उसके वातावरण का भी स्रष्टा होता है, इस

लिए वह सदैव सफल और विजयी रहेगा; और यही कारण है कि हमें सरदार जाफ़री के यहां किसी प्रकार की निराशा, थकन, अविश्वास और करुणा का चित्रण नहीं मिलता, बल्कि उसकी शायरी हमारे मन में नई-नई उमंगें जगाती है और हम शायर की सूझ-बूझ और उसके आशावाद से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते। कुछ शेर देखिये :

गो मेरे सिर पे सियह[1] रात की परछाई है,
मेरे हाथों में है सूरज का छलकता हुआ जाम।
मेरे अफ़कार[2] में है तल्ख़ी-ए-इमरोज़[3] मगर,
मेरे अशआ़र में[4] है इश्रते-फ़र्दा का[5] पयाम॥

और

सिर्फ़ इक मिटती हुई दुनिया का नज़्ज़ारा न कर,
आलमे - तख़्लीक़ में[6] है इक जहां ये भी तो देख।
मैंने माना मरहले हैं सख़्त राहें हैं दराज़[7],
मिल गया है अपनी मंज़िल का निशाँ ये भी तो देख।

यहां तक कि उसकी रोमांटिक नज़्मों में भी संघर्षशीलता की वही भावना रची-बसी है जो उसकी राजनैतिक और क्रान्तिकारी नज़्मों में हमें मिलती है। उसकी नज़्म 'इन्तज़ार न कर' का एक टुकड़ा देखिये :

---

१. काली २. चिंतन में ३. आज की कटुता ४. शेरों में ५. भविष्य के सुख का ६. निर्माण की अवस्था में ७. लम्बी

मैं तुझको भूल गया इस का एतबार न कर,
मगर खुदा के लिए मेरा इन्तज़ार न कर!
अजब घड़ी है मैं इस वक़्त आ नहीं सकता,
सरूरे-इश्क़[1] की दुनिया बसा नहीं सकता,
मैं तेरे साज़े - मोहब्बत पे गा नहीं सकता,
मैं तेरे प्यार के क़ाबिल नहीं हूं प्यार न कर,
न कर खुदा के लिए मेरा इन्तज़ार न कर!

जाफ़री की शायरी की आयु लगभग वही है जो भारत में 'प्रगतिशील लेखक-संघ' की। बीस वर्ष का यह ज़माना भारत के अतिरिक्त संसार-भर में अशान्ति का ज़माना रहा है। एक ओर भारत अंग्रेज़ी साम्राज्य की जंजीरों से मुक्त होने के लिए हाथ-पैर मार रहा था तो दूसरी ओर साम्राजी शक्तियां अपने खूनी जबड़े खोले नये-नये देश निगलने को लपक रही थीं। एक ओर दूसरे महायुद्ध के भयानक परिणाम संसार को आर्थिक संकट की लपेट में ले रहे थे और चारों ओर बेकारी और बेरोज़गारी का भूत दनदना रहा था तो दूसरी ओर रूस की साम्यवादी जीवन-व्यवस्था मनुष्य-मात्र के कल्याण के लिए मंज़िलों पर मंज़िलें मार रही थी और सारी दुनिया के श्रमजीवी उस जीवन-व्यवस्था से प्रभावित हो रहे थे। फिर भारत का विभाजन हुआ और लाखों व्यक्ति धर्म के नाम पर कट मरे। और आज फिर पूरी दुनिया तीसरे महायुद्ध के भय से कपकपा रही है। इस प्रकार की राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय

---

१. प्रेम के नशे की

परिस्थितियों में किसी दयानतदार शायर या लेखक के लिए चुप रहना या अपना कोई अलग काल्पनिक संसार बसा लेना किसी प्रकार संभव न था, अतएव सरदार जाफ़री ऐसे मानव-प्रेमी शायर ने प्रत्येक अवसर पर न केवल अपनी मानव-मित्रता की मशाल जलाई बल्कि मानव-शत्रुओं के विरुद्ध अपनी पवित्र घृणा भी प्रकट की। बग़ावत, अहदे-हाज़िर, साम्राज़ी लड़ाई, इन्क़िलाबे-रूस, मल्लाहों की बग़ावत, फ़रेब, तलंगाना, सैलाबे-चीन, जश्ने-बग़ावत इत्यादि नज़्मों के शीर्षक देखने भर से पता चल जाता है कि शायर की उंगली हर समय बदलती हुई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों की नब्ज़ पर रही है और उसकी समूची शायरी के अध्ययन से यह वास्तविकता खुलकर सामने आ जाती है कि उसने केवल परिस्थितियों की नब्ज़ सुनने तक ही स्वयं को सीमित नहीं रखा बल्कि उन धड़कनों के साथ-साथ उसका अपना दिल भी धड़कता रहा है। लेकिन इन्हीं कारणों से कुछ आलोचकों की राय यह भी है कि अधिकतर सामयिक विषयों पर शेर कहने के कारण सरदार जाफ़री की शायरी भी सामयिक है और नई परिस्थितियां उत्पन्न होते ही उसका महत्व कम हो जाएगा। एक हद तक मैं भी उन साहित्यकारों से सहमत हूँ लेकिन सरदार जाफ़री के इस कथन को एकदम झुठलाने का भी मैं साहस नहीं कर पाता, जिसमें वह स्वयं अपनी शायरी को सामयिक स्वीकार करते हुए कहता है कि "हर शायर की शायरी वक़्ती (सामयिक) होती है। मुमकिन है कि कोई

और इसे न माने लेकिन मैं अपनी जगह यही समझता हूं। अगर हम अगले वक़्तों के राग अलापेंगे तो बेसुरे हो जायेंगे। आने वाले ज़माने का राग जो भी होगा, वह आने वाली नस्लें गायेंगी। हम तो आज ही का राग छेड़ सकते हैं।"

('पत्थर की दीवार' की भूमिका से)

लेकिन इसके साथ ही जब वह अपनी यानी शायर की विशेषता इन शब्दों में जताता है कि :

मैं हूं सदियों का तफ़क्कुर[1] मैं हूं कर्नों का[2] ख़याल,
मैं हूं हमआग़ोश अज़ल से[3] मैं अबद से हमकिनार[4]।
मेरे नग़मे क़ैदे-माहो-साल से[5] आज़ाद हैं,
मेरे हाथों में है लाफ़ानी[6] तमन्ना का सितार।
नक़्शे-मायूसी में[7] भर देता हूं उम्मीदों का रंग,
मैं अता[8] करता हूं शाख़े-आरजू को[9] बर्गो-बार[10]।
चुन लिये हैं बाग़े-इन्सानी से अरमानों के फूल,
जो महकते ही रहेंगे मैंने गूंथे हैं वो हार।
आर्ज़ी[11] जलवों को दी है ताबिशे-हुस्ने-दवाम[12],
मेरी नज़रों में है रोशन आदमी की रहगुज़ार[13]।

और उसके इस दावे पर हम उसकी शायरी को परखते

---

१. मनन २. सदियों का ३. आदि काल को अपने बाहुपाश में लिये हुए ४. अन्त काल के गले मिला हुआ ५. वर्षों और महीनों की कैद से ६. अमर ७. निराशा के रेखा-चित्र में ८. प्रदान ९ आकांक्षा रूपी टहनी को १०. फल-फूल ११. अस्थायी १२. अमर सुन्दरता की चमक १३. पथ

हैं तो और जो भी परिणाम निकालें, यह बात हमें अवश्य विदित हो जाती है कि वह किसी एक जाति, किसी एक वर्ग या किसी एक दल का शायर नहीं, समूची मानवता का शायर है और उसकी शायरी इतिहास के बदलते हुए मूल्यों की द्योतक है।

अब कुछ शब्द मैं सरदार जाफ़री की काव्य-कला के बारे में भी कहना चाहता हूं क्योंकि कुछ लोगों के ख़याल में सरदार जाफ़री जब भावावेश में होता है तो कला के नियत तक़ाज़ों पर से उसकी नज़र उचट जाती है। यह दुरुस्त है कि उसकी कुछ प्रारंभिक नज़्मों की कुछ पंक्तियों का ढीलापन कानों को खटकता है और कुछ स्थानों पर उसका स्वर काव्यात्मक कम और भाषणात्मक अधिक हो गया है।* लेकिन सामूहिक रूप से उसकी शायरी कला के तमाम गुणों-लक्षणों को अपने दामन में लिये हुए है। उसके यहां रूप और विषय का ऐसा सुन्दर समन्वय है कि उर्दू साहित्य की परम्पराओं में अच्छी

---

* 'इक़बाल' और 'जोश' से प्रभावित होने के कारण या विषय-विशेष के कारण। क्योंकि सरदार जाफ़री के कथनानुसार रूप या आकार विषय पर आश्रित हैं। उसका कहना है कि "हैयत (रूप या आकार) का हुस्न बहुत ज़रूरी है लेकिन हैयत मौज़ू (विषय) की मुहताज है। इस लिए कि हैयत का मौज़ू के बग़ैर कोई तसव्वुर (कल्पना) नहीं किया जा सकता और चूंकि इन्सान बग़ैर तस्वीरों और अल्फ़ाज़ (शब्दों) के कुछ सोच नहीं सकता इसलिए मौज़ू अपनी हैयत साथ लेकर आता है। शायर का तजुर्बा और मश्क़ (अभ्यास) इस हैयत को अपनी सलाहियतों (क्षमताओं) से और ज़्यादा खूबसूरत बना सकता है।"

तरह रची-बसी होने पर भी हमें उसकी शायरी बिल्कुल नई मालूम होती है। इस पर उसने उर्दू शायरी को जो नई उपमायें और रूपक दिये हैं और मुक्त छन्द की टैक्नीक को सँवारा-निखारा है, उससे आधुनिक उर्दू शायरी की विशालता एवं उसके क्षेत्र में वृद्धि भी हुई है और वह रंगारंग भी हो उठी है। अपनी उपमाओं और रूपकों के नयेपन के बारे में स्वयं जाफ़री का कहना है कि :

"पुरानी तश्बीह और इस्तआ़रे (उपमा और रूपक) एक बहुत बड़ा ख़ज़ाना ज़रूर हैं लेकिन इस ख़ज़ाने पर क़नाअ़त (संतोष) कर लेना नादानी है। कभी तो इनके इस्तेमाल से बड़ा हुस्न पैदा हो जाता है लेकिन कभी-कभी वो ख़यालात और एहसासात (अनुभूतियों) को जकड़ भी लेते हैं और असलियत पर पर्दा डाल देते हैं। चूंकि ज़िन्दगी की नई हक़ीक़तें (वास्तविकतायें) नये तरीक़-ए-इज़हार और अन्दाज़े-बयान (वर्णन-शैली) का मुतालबा करती हैं, इसलिए मैं बगैर किसी झिझक के नई तश्बीह और इस्तआ़रे भी इस्तेमाल करता हूं और नई इमेजरी (Imagery) भी। मैंने इस उसूल को बहुत मुफ़ीद पाया है कि तश्बीह और इस्तआ़रे और इमेजरी मौजू के माहौल (वातावरण) से हासिल करने चाहियें। इसलिए आपको मेरे यहां ऐसे मिस्रए (पंक्तियां) मिलेंगी जैसे :

शाम की आँख में बारूद के काजल की लकीर

या

पहरेदारों की निगाहों से टपकता है लहू,
राइफ़ल करती है फ़ौलाद के होंटों से कलाम,
गोलियां करती हैं सीसे की ज़ुबां से बातें।

या

चावलों की सूरत पर मुफ़लिसी बरसती है"

अच्छा शायर होने के अतिरिक्त सरदार जाफ़री अच्छा आलोचक भी है। 'नया अदब' (मासिक पत्रिका) के सम्पादन[1] काल में उसने अपनी जिस आलोचनात्मक योग्यता का परिचय दिया और पिछले दिनों 'तरक़्क़ी-पसंद अदब'[2] का इतिहास लिखते हुए ज्ञान के जितने बड़े भंडार के साथ वह हमारे सामने आया है, उससे यह तय करने में कठिनाई होती है कि वह शायर बड़ा है या आलोचक। शायर और आलोचक के अतिरिक्त वह बहुत अच्छा भाषणकर्त्ता भी है[3]। उसने कहानियां भी लिखी हैं और नाटक भी [4]। लेकिन इतना

---

१. इन दिनों सरदार जाफ़री बम्बई से त्रैमासिक 'निगाह' भी निकाल रहा है। २. चार भागों की पुस्तक का पहला भाग 'अंजुमन तरक्की-ए-उर्दू' अलीगढ़ से प्रकाशित हो चुका है। ३. किसी समय और किसी विषय पर कहिये जाफ़री बिना थके बोल सकता है। सच बात कहने और फिर प्रमाणों द्वारा उस कड़वे सत्य को मनवाने का उसे ऐसा कमाल हासिल है कि सैद्धांतिक रूप से उससे मत-भेद रखने वाले लोग भी उसका भाषण सुनकर एक बार तो मंत्रमुग्ध हो ही जाते हैं। ४. कहानी-संग्रह 'मंज़िल' और नाटकों का संग्रह 'यह किसका ख़ून है' के नाम से प्रकाशित हैं।

कुछ लिखने पर भी वह कहता है :

ये तो हैं चंद ही जल्वे जो झलक आये हैं,
रंग हैं और मेरे दिल के गुलिस्तां में अभी।
मेरे आग़ोशे-तख़य्युल[1] में हैं लाखों सुबहें,
आफ़ताब[2] और भी हैं मेरे गिरेबाँ में अभी।

और उसके इस कथन से हमें उसके व्यक्तित्व को समझने में बड़ी सहायता मिलती है। मैं सरदार जाफ़री को दस बरस से जानता हूं और एक-दो बार मुझे उसके आतिथ्य का भी सौभाग्य प्राप्त हो चुका है और मुझे आशंका है कि यदि मैं उसके व्यक्तित्व के सम्बंध में कुछ लिखने बैठूंगा तो अलग से एक पुस्तक हो जायेगी। अतएव अपनी ओर से कुछ लिखने की बजाय मैं उर्दू के एक प्रसिद्ध साहित्यकार अहमद नदीम क़ासमी के कुछ शब्द यहां नक़ल करता हूं :

"वह एक मुस्तक़िल मिज़ाज-नौजवान, निडर सिपाही और पाकीज़ा-दिल[3] दोस्त है। अपने नज़रियात[4] के इज़हार[5] और ऐलान से उसे कोई ताक़त नहीं रोक सकती। लेकिन वह मुख़ालिफ़ीन के[6] एतराज़ात[7] सुनकर तिलमिला उठने का आदी नहीं। उसका दिमाग़ मुतवाज़न[8] है। वक़्ती जोशो-ख़रोश से वह मुतास्सिर[9] नहीं होता बल्कि हर काम की इब्तदा करने से पहले अंजाम को महसूस करता और मस[10] कर लेता है। उसकी शायरी में भी

---

१. कल्पना-रूपी गोद २. सूरज ३. शुद्ध हृदय ४. धारणाओं के ५. प्रकटीकरण ६. विरोधियों के ७. आक्षेप ८. संतुलित ९. प्रभावित १०. स्पर्श

हुस्न और अमक़[1] है और शख़्सीयत[2] में भी। वह सूबजाती तअ़स्सुब[3] से बुलंद और एक आ़लमगीर अख़ुवत[4] का अ़लमबरदार[5] है। ज़िन्दगी ने उसके साथ अनगिनत मज़ाक़ किये हैं, मगर जवाब में उसने ज़िन्दगी को अपना ऐसा मुतीअ़[6] बना लिया है कि अब उसकी नज़रों में हिमालय की बुलंदी और ओक़यानूस[7] की गहराई यकसां[8] हैसियत रखती है।"

हां, अपनी ओर से यदि सरदार जाफ़री के व्यक्तित्व के बारे में मुझे केवल एक वाक्य कहना पड़े तो मैं कह सकता हूं कि जाफ़री से मिलने से पूर्व उसकी शायरी के माध्यम से जितना ख़तरनाक व्यक्ति मैं उसे समझता था, मिलने पर वह मुझे उससे कहीं अधिक मासूम नज़र आया।

---

१. गहराई २. व्यक्तित्व ३. प्रांतीय संकीर्णता से ४. विश्वव्यापी भ्रातृत्व का ५. ध्वज-वाहक ६. अनुयायी ७. अतलांतिक महासागर ८. समान

चयन

इस संकलन की अधिकतर नज़्में-ग़ज़लें
'जाफ़री' ने विभिन्न जेलों
में लिखी हैं।

पत्थर की दीवार

क्या कहूं भयानक है
या हसीं है ये मन्ज़र
ख़्वाब[1] है कि बेदारी[2]
कुछ पता नहीं चलता
फूल भी हैं साये भी
ख़ाक़ भी है पानी भी
आदमी भी मेहनत भी
गीत भी हैं आंसू भी
फिर भी एक ख़ामोशी
रूह़ो-दिल की तनहाई
इक तवील[3] सन्नाटा
जैसे सांप लहराये
माहोसाल[4] आते हैं
और दिन निकलते हैं
जैसे दिल की बस्ती से
अजनबी गुज़र जाये

---

१. स्वप्न २. जाग्रत अवस्था ३. दीर्घ ४. महीने और वर्ष

चीख़ती हुई घड़ियां
जख़्म-ख़ुर्दा तायर[1] हैं
नर्म रौ सुबक[2] लम्हे
मुंजमिद[3] सितारे हैं
रेंगती हैं तारीखें
रोज़ो-शब की[4] राहों पर
ढूंढ़ते हैं चश्मो-दिल[5]
नक़्शे-पा[6] नहीं मिलते
ज़िन्दगी के गुलदस्ते
ज़ेबे-ताक़े-नसियां[7] हैं

पत्तियों की पलकों पर
ओस जगमगाती है
इमलियों के पेड़ों पर
धूप पर सुखाती है
आफ़ताब हंसता है
मुस्कराते हैं तारे
चांद के कटोरे से
चांदनी छलकती है
जेल की फ़िज़ाओं में[8]
फिर भी इक अंधेरा है

---

१. घायल पक्षी २. लघु ३. जमे हुए ४. दिन रात की ५. आँखें और दिल ६. पदचिह्न ७. विस्मृति-रूपी ताकचे की शोभा ८. वातावरण में

जैसे रेत में गिर कर
दूध जज़्ब हो जाये
रोशनी के गालों पर
तीरगी के[1] नाख़ुन की
सैंकड़ों ख़राशें[2] हैं

पत्थरों की दीवारें

बारकों की तामीरें[3]
अज़दहों के[4] पैकर[5] हैं
जो नये असीरों को[6]
रात दिन निगलते हैं
बेहिसी की मोहरें हैं

पत्थरों की दीवारें

पत्थरों के फ़र्श और छत
पत्थरों की महराबें
पत्थरों की पेशानी
पत्थरों की आँखें हैं
पत्थरों के दरवाज़े
पत्थरों की अंगड़ाई
पत्थरों के पंजों में
आहनी[7] सलाख़ें हैं

---

१. अंधेरे के २. चोटें ३. निर्माण ४. अजगरों के ५. आकार या शरीर ६. कैदियों को ७. लोहे की

और इन सलाखों में
हसरतें, तमन्नाएं
आरज़ूएं, उम्मीदें
ख़्वाब और ताबीरें[1]
अश्क[2] फूल और शबनम
चांद की जवां नज़रें
धूप की सुनहरी ज़ुल्फ़
बादलों की परछाईं
सुबहो-शाम की परियां
मौसमों की लैलायें
सूलियों पे चढ़ती हैं
और इस अंधेरे में
सूलियों के साये में
इन्क़िलाब पलता है
तीरगी के[3] कांटों पर
आफ़ताब चलता है
पत्थरों के सीने से
सुर्ख़ हाथ उगते हैं
हाथ हैं कि तलवारें
रात के अंधेरे में
जैसे शम्मअ़ जलती है

---

१. स्वप्न-फल २. आंसू ३. अंधेरे के

उंगलियां फ़रोज़ां[1] हैं
बारकों के कोनों से
साज़िशें निकलती हैं
ख़ामशी की नब्ज़ों में
घंटियां सी बजती हैं

जाने कैसे क़ैदी हैं
किस जहां से आये हैं
नाख़ुनों में कीलें हैं
हड्डियां शिकस्ता[2] हैं
नौजवान जिस्मों पर
पैरहन[3] हैं ज़ख़्मों के
जगमगाते माथों पर
ख़ून की लकीरें हैं
अश्क[4] आग के क़तरे
सांस तुंद[5] आंधी है
बात है कि तूफ़ां है
अबरुओं की[6] जुंबिश में[7]
अज़्म[8] मुस्कराते हैं
और निगह की लर्ज़िश में[9]
हौसले मचलते हैं

---

१. प्रकाशमान २. टूटी हुई ३. लिबास ४. आंसू ५. तेज़ ६. भवों की ७. कम्पन या थरथराहट ८. संकल्प ९. नज़र की थरथराहट में

त्यौरियों की शिकनों में
नक़्शे-पा[1] बग़ावत के

जितना ज़ुल्म सहते हैं
और मुस्कराते हैं
जितना दुख उठाते हैं
और गीत गाते हैं
जब्र और बढ़ता है
ज़हर और चढ़ता है
ज़ालिमों की शिद्दत[2] पर
ज़ुल्म चीख़ उठता है
उनके लब[3] नहीं हिलते
उनके सर नहीं झुकते
दिल से आह के बदले
इक सदा निकलती है
"इन्क़िलाब ज़िंदाबाद"

ख़ाके-पाक के[4] बेटे
खेतियों के रखवाले
हाथ कारख़ानों के
इन्क़िलाब के शहपर[5]
कोहसार के शाहीं[6]

---

१. पदचिह्न २. वेग ३. होंट ४. पवित्र मिट्टी ५-६. बड़े पंखों वाले पक्षी, बाज़ पक्षी

पत्थरों की कोरों पर
आंधियों की राहों पर
बिजलियों की बारिश में
गोलियों के तूफ़ां में
सिर उठाये बैठे हैं

इन्क़िलाब - सामां[1] है
हिन्द की फ़ज़ा[2] सारी
नज़्अ़ के[3] है आ़लम में[4]
ये निज़ामे - ज़रदारी[5]
वक़्त के महल में है
जश्ने-नौ की[6] तय्यारी
जश्ने - आमे - जमहूरी[7]
इक़्तिदारे - मज़दूरी[8]
ग़र्क़े - आतिशो-आहन[9]
बेबसी व मजबूरी
मुफ़्लिसी व नादारी
तीरगी के[10] बादल से
जुगनुओं की बारिश है
रक़्स में[11] शरारे हैं

---

१. क्रान्तिकारी २. वातावरण ३-४. मरणासन्न अवस्था में ५. पूंजीवादी व्यवस्था ६. नव उत्सव की ७. जनतंत्र का सार्वजनिक उत्सव ८. श्रमजीवियों का शासन ९. आग और लोहे में डूबी हुई १०. अंधकार के ११. नृत्यशील

हर तरफ़ अंधेरा है
और इस अंधेरे में
हर तरफ़ शरारे हैं
कोई कह नहीं सकता
कौन - सा शरारा कब
बेक़रार हो जाये
शोलाबार[1] हो जाये
इन्क़िलाब आजाये

---

१. शोले बरसाने वाला

बम्बई

सब्ज़ो-शादाब[1] साहिल
रेत के और पानी के गीत
मुस्कराते समुन्दर का सय्याल[2] चेहरा
चाँद सूरज के टुकड़े
लाखों आईने मौजों में बिखरे हुए
किश्तियां बादबानों के आंचल में अपने सिरों को छुपाये हुए
जाल नीले समुन्दर में डूबे हुए
ख़ाक पर सूखती मछलियां
घाटनें—पत्थरों की वो तर्शी हुई मूरतें
एलीफेंटा के ग़ारों से जो रक़्स[3] करती निकल आई हैं

रातें आंखों में जादू का काजल लगाये
शामें नीली हवा की नमी में नहाई हुई
सुबहें शबनम के बारीक मलबूस[4] पहने हुए
ख़्वाब-आलूद[5] कुहसार के[6] सिलसिले
जंगलों के घने साये
मिट्टी की ख़ुशबू
महकती हुई कोंपलें

---

१. हरा-भरा २. तरल ३. नृत्य ४. लिबास ५. निद्रित ६. पहाड़ी के

पत्थरों की चट्टानें
अपनी बांहों में बहरे-अरब को समेटे हुए

वो चट्टानों पे रक्खे हुए ऊंचे-ऊंचे महल
चिकनी दीवारों पर
क़त्ल, ग़ारतगरी[1], बुज़दिली, नफ़अ़ख़ोरी की परछाइयां
रेशमी साड़ियां
मख़मलीं जिस्म, ज़हरीले नाखूनों की बिल्लियां
ख़ून की प्यास खादी के पैराहनों में[2]

जगमगाते हुए क़ुमक़ुमे[3], पार्क, बाग़ात और म्यूज़ियम
संगे-मरमर के बुत, धात के आदमी
सर्दो-संगीन[4] अ़ज़मत के[5] पैकर[6]
आंखें बेनूर, लब बेसदा[7], हाथ बेजान
हिंद की बेबसी और महकूमी की यादगारें
सैंकड़ों साल के गर्म आतिशकदे[8]
ज़र्द संदल की आग
ऊदो-अंबर के[9] शोले

---

१. लूट-खसूट २. वस्त्रों में ३. बिजली के बल्ब ४. ठंडी और कड़ी ५. महानता के ६. शरीर, आकार ७. शब्द-रहित ८. अग्नि-कुंड ९. सुगंधित सामग्री

'चालें'[1] इफ़लास की गर्द, तारीकियां[2]
गंदगी और उफ़ूनत[3]
घूरे सड़ते हुए
रहगुज़ारों पे सोते हुए आदमी
टाट पर और काग़ज़ के टुकड़ों पे फैले हुए जिस्म, सूखे हुए हाथ
ज़ख़्म की आस्तीनों से निकली हुई हड्डियां
कोढ़ियों के हुजूम
'खोलियां'[4], जैसे अंधे कुएं
गर्म सीनों, मोहब्बत की गोदों से महरूम बच्चे
बकरियों की तरह रस्सियों से बंधे
इनकी मांयें अभी कारखानों से वापिस नहीं आई हैं

चिमनियां भुतनियों की तरह बाल खोले हुए
कारखाने गरजते हुए
ख़ून की और पसीने की बू में शराबोर[5]
ख़ून सरमायादारी के नालों में बहता हुआ
भट्टियों में उबलता हुआ
सर्द सिक्कों की सूरत में जमता हुआ
सोने-चांदी में तबदील होता हुआ

---

१. बम्बई की विशेष प्रकार की बड़ी इमारतें जिनके कमरों में मज़दूर आदि श्रमजीवियों के कुटुम्ब रहते हैं। २. अंधेरे ३. सड़ांद ४. चालों के कमरे ५. लथपथ

बैंक की खिड़कियों में चिराग़ां[1]
सड़कें दिन-रात चलती हुईं
सांस लेती हुईं
आदमी ख़्वाहिशों के अंधेरे नशेबों में[2] सैलाब[3] की तरह
बहते हुए
चोर-बाज़ार, सट्टा, जुवारी
रेस के घोड़े, सरकार के मंत्री
सिनेमा, लड़कियां, एक्टर, मसख़रे
एक-एक चीज़ बिकती हुई
गाजरें, मूलियां, ककड़ियां
जिस्म और ज़हन[4] और शायरी
इल्म, हिकमत[5], सियासत
आँखड़ियों और होंटों के नीलाम-घर
आरिज़ों की[6] दुकानें
बाज़ुओं और सीनों के बाज़ार
पिंडलियों और रानों के गोदाम
देश-भक्ति के दल्लाल खादी के ब्योपारी
अक़्ल, इन्साफ़, पाकीज़गी[7] और सदाक़त के[8] ताजिर
कांग्रेस के मदारी

ये है हिन्दोस्तां को उरूस-अल्बदाद[9]
सरज़मीने-दकन की[10] दुल्हन—बम्बई

---

१. दीपमाला २. गढ़ों में ३. बाढ़ ४. मस्तिष्क ५. विज्ञान ६. कपोलों की ७. पवित्रता ८. सत्य के ९. शहरों की दुल्हन, शहरों में सब से सुन्दर शहर १०. दक्षिण-भूमि

एक जन्नत जहन्नुम की आग़ोश में
या इसे यूँ कहूँ
एक दोज़ख़ है फ़िर्दौस[1] की गोद में

ये मेरा शहर है
गो मेरा जिस्म इस ख़ाकदां से[2] नहीं
मेरी मिट्टी यहां से बहुत दूर गंगा के पानी से गूँधी गई है
मेरे दिल में हिमालय के फूलों की ख़ुशबू बसी है
फिर भी ऐ बम्बई ! तू मेरा शहर है
तेरे बाग़ात में[3] मेरी यादों के कितने ही रम-ख़ुर्दा आहू[4]
मैंने तेरे पहाड़ों की ठंडी हवा खाई है
तेरी शफ़्फ़ाफ़[5] झीलों का पानी पिया है
तेरे साहिल की हंसती हुई सीपियाँ मुझको पहचानती हैं
नारियल के दरख़्तों की लम्बी क़तारें
तेरे नीले समुन्दर के तूफ़ान और क़हक़हे
तेरे दिलकश मुज़ाफ़ात के[6] सब्ज़ाज़ारों की ख़ामोशियां
रंगतें, नकहतें[7] , सब मुझे जानती हैं
इस जगह मेरे ख़्वाबों को आंखें मिलीं
और मेरी मोहब्बत के बोसों ने अपने हसीं होंट हासिल किये

तू मेरी पार्टी, मेरी मां का वतन
लाल झंडे की वो पहली अंगड़ाई है

---

१. जन्नत २. धरती ३. बाग़ों में ४. हिरन चौकड़ियाँ भर रहे हैं ५. निर्मल ६. उपनगरों के ७. सुगंधियां

जिसने हिन्दोस्तां को जगाया
तुझको लेनिन ने आवाज़ दी
मास्को ने पुकारा
ताज़िकस्तान और उज़बकस्तान के शायरों ने तेरे गीत गा

मरहबा[1] बम्बई
मरहबा सुर्ख़ परचम[2]
आंसुओं और आंखों ने पलकों की चिलमन हटाकर
तेरी भरपूर अंगड़ाई देखी
लाखों सिर उठ गये
मुट्ठियां बंध गईं
गर्दनें तन गईं
सीने बाहर निकल आये
हिन्दोस्तां इक नये दौर में आ गया

बम्बई

तेरे सीने में सरमाया का ज़हर भी
इन्क़िलाब और बग़ावत की तिर्याक़[3] भी
तेरे पहलू में फ़ौलाद का क़ल्ब[4] है
तेरी नब्ज़ों में मज़दूरो-मल्लाह का ख़ून है
तेरी आग़ोश में कारखानों की दुनिया बसी है
सेवरी, लाल बाग़ और परेल

---

१. धन्य २. लाल झंडा ३. विष-नाशक औषधि ४. दिल

और यहां तेरे बेटे तेरी बेटियां
उनकी दुखती हुई उंगलियां
सूत के इक-इक तार से
मुल्क के क़ातिलों का कफ़न बुन रही हैं।

मेरे ख़्वाब

ऐ मेरे हसीं ख़्वाबो
तुम कहां से आये हो
किस उफ़क़ से[1] उभरे हो
किस शफ़क़ से[2] निखरे हो
किन गुलों की सोहबत में
तुमने तरबीयत पाई
किस जहां से लाये हो
ये जमालो रअ़नाई[3]

जेल तो भयानक है
इस ज़लील दुनिया में
हुस्न का गुज़र कैसा
रंग है न नकहत[4] है
नूर[5] है न जलवा है
जब्र की हक़ूमत है
तुम कहां से आये हो
ऐ मेरे हसीं ख़्वाबो

---

१. क्षितिज से २. ऊषा से ३. सुन्दरता ४. सुगंध ५. प्रकाश

मैंने तुमको देखा है
याद अब नहीं आता
शायद एक लड़की की
थरथराती पलकों में
जगमगाती आंखों में
या किसी तबस्सुम में[1]
जो नहा के निकला हो
आंसुओं की शबनम से

एक हुमकते बच्चे की
मुट्ठियों के फूलों पर
तितलियों की यूरिश[2] सी
और मां की नज़रों में
सैंकड़ों उमीदों के
शोख़ - रंग गुलदस्ते

मैंने तुमको देखा है
नन्ही नन्ही गुड़ियों में
नाचते खिलौनों में
या रबर की गेंदों में
मैंने तुमको देखा है
घुटनियों चले हो तुम

---

१. मुस्कान में २. आक्रमण

तोतली ज़बानों से
तुमने दूध मांगा है

'एक शाहज़ादा था'
'एक शाहज़ादी थी'
इस हसीं कहानी पर
जाने कितने बच्चों ने
अपने सिर उठाये हैं
जाने कितनी आंखों में
फूल मुस्कराये हैं
और मैं समझता हूं
तुम इसी कहानी की
सरज़मीं[1] से आये हो

कुछ किसान कन्यायें
सब्ज़ो - सुर्ख़ शीशों की
चूड़ियां कलाई में
और गिलट की चाँदी की
हंसलियों से गर्दन में
नीम चांद के[2] हल्के
चोलियों पे लहंगों पर
ज़र्द ज़र्द मिट्टी के

---

१. लोक २. आधे चाँद के

ज़र्द बेल बूटे से
मैले - मैले आंचल पर
बालियों के बोसे[1] हैं
उनके हाथ में हंसिये
गीत गाने लगते हैं
झूम झूम कर पौदे
अपना सिर झुकाते हैं
नौजवान लढ़ियारे
खेत की मंडेरों पर
प्रेम गीत गाते हैं
ऐ मेरे हसीं ख़्वाबो
तुम इन्हीं बहारों की
कोंपलों से फूटे हो

एक कारख़ाने में
चन्द नौजवानों ने
अंजुमन बनाई है
और उसमें लेनिन की
इक किताब पढ़ते हैं
सुन रही हैं दीवारें
हंस रही है तारीकी[2]
नौजवान बैठे हैं
और किताब पढ़ते हैं

---

१. चुम्बन २. अंधकार

एक एक जुमले पर
चौंक चौंक पड़ते हैं
एक एक फ़िक़रे पर
अपना सिर हिलाते हैं
गाह[1] आह भरते हैं
गाह मुस्कराते हैं
मैंने मां के सीनों में
ऐ मेरे हसीं ख़्वाबो
तुमको नाचते देखा
मैंने तुमको देखा है
जब सियाह मेहराबें
आस्मां पे बनती हैं
जब सुकूत की[2] परियां
कहकशां पे चलती[3] हैं
गेसुओं की नकहत से[4]
जब हवा महकती है
जब फ़ज़ा[5] चहकती है
मेरे गर्म होंटों पर
प्यार थरथराते हैं
और मेरी महबूबा
अपने रंगे-आरिज़ से[6]

---

१. कभी २. चुप्पी की ३. आकाश-गंगा पर ४. केशों की सुगंध से ५. वातावरण ६. कपोलों के रंग से

बिजलियां बनाती है
और मेरी नज़रों में
इक जहान मिटता है
इक जहान बनता है
इक ज़मीन हटती है
इक ज़मीन आती है

मैं असीर हूँ[1] लेकिन
तुमको कोई भी क़ानून
क़ैद कर नहीं सकता
सरबुलंद और आज़ाद
यूं ही मुस्कराये जाओ
मेरे दिल की दुनिया में
यूं ही जगमगाये जाओ
क़ैदो-बंद के जल्लाद
तुमको पा नहीं सकते
लम्बे-लम्बे ज़ालिम हाथ
तुमको छू नहीं सकते
ऐ मेरे हसीं ख़्वाबो !

---

१. क़ैदी

अवध की ख़ाके-हसीं

गुज़रती बरसात आते जाड़ों के नर्म लम्हे
हवाओं में तितलियों के मानिंद उड़ रहे हैं
मैं अपने सीने में दिल की आवाज़ सुन रहा हूं
रगों के अन्दर लहू की बूंदें मचल रही हैं
मेरे तसव्वुर के ज़ख़्म-ख़र्दा[1]
उफ़क़ से[2] यादों के क़ारवां यूं गुज़र रहे हैं
कि जैसे तारीक शब के[3] तारीक आस्मां से
चमकते तारों के मुस्कराते हुजूम गुज़रें

मैं क़ैदख़ाने में इश्क़पेचां की सब्ज़ बेलों को ढूंडता हूँ
जो फैल जाती हैं अपने फूलों के नन्हे-नन्हे चिराग़ लेकर
कहां हैं वो दिलनवाज़ बांहें
वो शाख़े-संदल[4]
कि जिस पे अंगड़ाइयों ने अपने हसीं नशेमन[5] बना लिये हैं
मैं अपनी मां के सफ़ेद आंचल की छाओं को याद कर रहा हूँ
मेरी बहन ने मुझे लिखा है
नदी के पानी में बेद की झाड़ियां अभी तक नहा रही हैं
पपीहे रुख़सत नहीं हुए हैं
अभी वो अपनी सुरीली आवाज़ से दिलों को लुभा रहे हैं

---

१. कल्पना के घायल २. क्षितिज से ३. अंधेरी रात के ४. संदल की शाखा ५. घोंसले

मैं रात के वक़्त अपने ख़्वाबों में चौंक पड़ता हूं जैसे मुझ
को अवध की मिट्टी बुला रही है
हसीन झीलें कंवल के फूलों की चादरों में ढकी हुई हैं
फ़ज़ाओं में मेघदूत परवाज़ कर रहे हैं[1]
न जाने कितनी मोहब्बतों के पयाम लेकर
घटाओं की अप्सरायें अपनी
घनेरी ज़ुल्फ़ों में आख़री बार मुस्कराकर
ख़लीज बंगाल और बहरे-अरब के[2] मोती पिरो रही हैं
हरे परों और नीले फूलों के मोर खुश होके नाचते हैं
क़दीम[3] गंगा का पाक[4] पानी ज़मीं के दामन को धो रहा है
वो खेतियां धान से भरी हैं
जहां हवायें अज़ल के[5] दिन से सितार अपने बजा रही हैं
हिमालय की बुलंदियां बरफ़ से ढकी हैं
न आस्मां-बोस[6] चोटियों को
सहर के[7] सूरज ने सात रंगों की कलियों से सजा दिया है
शफ़क़की[8] सुर्ख़ी में मेरी बहनों की मुस्कराहट घुली हुई है

मेरे तसव्वुर में[9] साक़ियों का ख़िरामे-रंगीं[10] न जामो-
मीना की गर्दिशें हैं
न मैकदे हैं न शोरिशें हैं

---

१. उड़ रहे हैं २. अरब सागर के ३. प्राचीन ४. पवित्र ५. आदि काल से ६. गगन-चुम्बी ७. सुबह के ८. उषा की ९. कल्पना में १०. रंगीन (सुन्दर) चाल

मैं छोटे-छोटे घरों की छोटी सी ज़िन्दगी में घिरा हुआ हूँ
अंधेरे क़स्बों को याद करके तड़प रहा हूँ
वो जिनकी गलियों में मेरे बचपन की यादें अब तक भटक
रही हैं
जहाँ के बच्चे पुराने कपड़े की मैली गुड़ियों से खेलते हैं
वो गाँव जो सैंकड़ों बरस से बसे हुए हैं
किसानों के झोपड़ों पे तरकारियों की बेलें चढ़ी हुई हैं
पुराने पीपल की जड़ में पत्थर के देवता बेख़बर पड़े हैं
क़दीम बरगद के पेड़ अपनी जटायें खोले हुए खड़े हैं
ये सीधे-सादे ग़रीब इन्सान नेकियों के मुजस्समे[1] हैं
ये मेहनतों के खुदा, ये तख़्लीक़[2] के पैग़म्बर
जो अपने हाथों के खुरदरेपन से ज़िन्दगी को संवारते हैं
लोहार के घन के नीचे लोहे की शक्ल तबदील हो रही है
कुम्हार का चाक चल रहा है
सुराहियां रक़्स[3] कर रही हैं
सफ़ेद आटा सियाह चक्की से राग बनकर निकल रहा है
सुनहरे चूल्हों में आग के फूल खिल रहे हैं
पतीलियां गुनगुना रही हैं
धूएं से काले तवे भी चिंगारियों के होंटों से हंस रहे हैं
दोपट्टे आंगन में डोरियों पर टंगे हुए हैं
और उनके आंचल से धानी बूंदें टपक रही हैं
सुनहरी पगडंडियों के दिल पर

---

१. मूर्तियाँ २. निर्माण ३. नृत्य

सियाह लहंगों की सुर्ख़ गोटें मचल रही हैं
ये सादगी किस क़दर हसीं है
मैं जेल में बैठे-बैठे अक्सर ये सोचता हूं
जो हो सके तो अवध की प्यारी ज़मीं को गोद में उठा लूं
और इसकी शादाब लहलहाती हुई जबीं को[1]
हज़ारों बोसों से जगमगा दूं

मैं अपने बचपन के साथियों की गरजती आवाज़ सुन रहा हूँ
वो कारख़ानों के सामने इन्क़िलाब बनकर खड़े हुए हैं
वो खेतियों में बहार बनकर रवां-दवां [2] हैं
अंधेरी कानों की तीरगी में[3]
वो नूर[4] बनकर उतर रहे हैं
ज़मीं के सीने पे काश्तकारों की लाठियों के
हज़ारों जंगल उगे हुए हैं
कुदालें खेतों की पासबां[5] हैं
दरांतियाँ जगमगा रही हैं
ज़मीं के ग़ासिबों के[6] चेहरे का रंग काफ़ूर हो रहा है[7]
मिलों के मालिक लरज़ रहे हैं

ग़रीब सीता के घर पे कब तक रहेगी रावन की हुक्मरानी
द्रौपदी का लिबास उसके बदन से कब तक छिना करेगा

---

१. माथे को २. प्रवाहित ३. अन्धकार में ४. प्रकाश ५. रक्षक ६. उपभोगियों के ७. उड़ रहा है

शकुन्तला कब तक अंधी तक़दीर के भंवर में फंसी रहेगी
ये लखनऊ की शगुफ़्तगी[1] मक़बरों में कब तक दबी रहेगी
सिरों के ऊपर मुसीबतों के पहाड़ कब तक गिरा करेंगे
बिलकती आँतों को भूख कब तक डसा करेगी
ज़मीं के सीने पे क़ातिलों के गिरोह कब तक चला करेंगे
ख़बासतें[2] कब तलक अहिंसा का रूप धारे फिरा करेंगी

किसान जो अपनी पाक धरती पे जानवर की तरह झुके हैं
वो जिनकी पीठों पे भारी ईंटें लदी हुई हैं
जो कच्चे चमड़े के सख़्त जूतों से पिट रहे हैं
ये जिस्म जो कारख़ानेदारों की भट्टियों में उबल रहे हैं
ये हाथ लोहे के दांत जिनको चबा रहे हैं
ये ख़ून जो नफ़अख़ोर बनियों की थैलियों में खनक रहा है
ये औरतें जिनके हाथ पीछे बंधे हुए हैं
जो ऊंचे पेड़ों पे अपने बालों की फांसियों में लटक रही हैं
ये कांपती मुफ़लिसी जो आई है छातियों का लगान लेकर
ये नन्हे बालक जो मालिकों के मवेशियों को चरा रहे हैं
जो खेत-मज़दूर भूखे रहकर ज़मीं से गेहूं उगा रहे हैं
ये अपने सीनों की आग कब तक दबा सकेंगे
ये अपनी नफ़रत का ज़हर कब तक छुपा सकेंगे
ये ज़ख़्म कब तक हरे रहेंगे
अवध की ख़ाके-हसीं के ज़र्रे बगूले बनकर मचल रहे हैं

---

१. प्रफुल्लता २. दुष्टतायें ३. पवित्र

अब आंसुओं की पुरानी झीलों से सुर्ख़ शोले उबल रहे हैं
ग़मों की भारी सिलें दिलों से सरक रही हैं
शुजाअ़तें[1] गोफनों को लेकर निकल रही हैं
झुके हुए सर उभरते सूरज की शानो-शौकत से उठ रहे हैं
ये सूरमाओं की सरज़मीं[2] है
ये आस्माने-ख़मोश[3] तूफ़ाने-बर्क़ो-बारां का[4] आस्मां है
ये मुस्कराती हुई फ़ज़ा[5] सुर्ख़ आंधियों से भरी हुई है
यहां का एक-एक चप्पा लाखों बग़ावतों से बसा हुआ है
बग़ावतें जो मुग़ल शहनशाहियत की चूलें हिला चुकी हैं
बग़ावतें जो सामराज को बुलंदियों से गिरा चुकी हैं
बग़ावतें जो फ़िरंगियों के दिलों पे हैबत[6] बिठा चुकी हैं
यही पुरानी बग़ावतें फिर नये सिरे से जवां हुई हैं

मेरे वतन की ज़मीं को नापाक[7] करने वालो
मैं उन पुरानी नई अवामी[8] बग़ावतों ही का तर्जुमां हूं
मैं अपने अहले-वतन के[9] एहसास और जज़्बात की ज़ुबां हूं
मैं ख़ाक से कह रहा हूं अपने अनाज को कोख में छुपाले
लुटेरे खेतों में फिर रहे हैं
मैं लाखों मज़दूर नौजवानों के साथ मैदां में आ रहा हूं
ग़दर के मक़्तूल[10] सूरमाओं को मरक़दों से[11] उठा रहा हूं

---

१. वीरतायें २. धरती ३. मौन आकाश ४. बिजली और बादलों के तूफ़ान का ५. वातावरण ६. भय ७. अपवित्र ८. सार्वजनिक ९. देशवासियों के १०. क़त्ल किये हुए ११. समाधियों, क़ब्रों से

मैं 'चोराचोरी' के सोये शेरों को गीत गाकर जगा रहा हूं
चमन के फूलो, चमन में इक आग-सी लगा दो
लचकती शाखो, फ़ज़ा में ज़ंजीर बन के फैलो
ज़मीं की धातो हवा में ज्वालामुखी उछालो
मिलों के पहियो, बग़ावतों के तराने गाओ
कहां हो ऐ नेकियों की फौजो !
बदी के ऊंचे महल गिरा दो
सदाक़तो[1], आओ झूठ के सांप को कुचल दो
हयात की[2] तेज़ो-तुंद मौजो फ़ना के[3] ख़ाशाक को[4] बहादो
सहर की[5] किरनो, अंधेरी रातों के सिर पे बरसो
अवाम के[6] दुश्मनों का नामो-निशां मिटा दो

अवध की ख़ाके-हसीं के ज़र्रो,
जो सैंकड़ों मील दूर से उड़के मेरे ख़्वाबों में आगये हो
मेरे वतन की ज़मीं से मेरा सलाम कहना
उसे बताना
कि मेरे होंटों पे संगो-आहन की[7] सर्द मुहरें लगी हुई हैं
वो काला क़ानून एक दीवार बन के रस्ते में आ गया है
जिसे अहिंसा का नाम लेकर पुजारियों ने खड़ा किया है
मगर ये दीवार रोक सकती नहीं है मुझको

---

१. सच्चाइयों २. जीवन की ३. मृत्यु के ४. कूड़े-करकट को ५. सुबह की ६. जनता के ७. पत्थर और लोहे की

उबलते ज्वालामुखी को कोई दबा सका है ?
मैं आज मजबूर हूं तो क्या है
वतन से कुछ दूर हूं तो क्या है
मगर मैं उसके मुजाहिदों की[1] सफ़ों से बाहर नहीं गया हूं

१. धर्मयोद्धाओं की

तुम्हारी आंखें

तुम्हारी आंखें,
हसीन, शफ़्फ़ाफ़[१], मुस्कराती, जवान आंखें
लरज़ती पलकों की चिलमनों में
शहाबी[२] चेहरे पर अबरुओं की[३] कमां के[४] नीचे
तुम्हारी आंखें
वो जिनकी नज़रों के ढंडे साये में मेरी उल्फ़त
मेरी जवानी की रात परवान चढ़ रही थी
तुम्हारी आंखें
अंधेरी रातों में जो सितारों की रोशनी से
फ़ज़ाए-ज़िंदां में[५] झांकती हैं

मैं लिख रहा हूं
तुम्हारी आंखें सफ़ेद काग़ज़ पे अपनी पलकों से चल रही हैं

मैं पढ़ रहा हूं
तुम्हारी आंखें हर इक सतर की भवों के नीचे लरज़ रही हैं
मैं सो रहा हूं
तुम्हारी आंखें तुम्हारी पलकें कहानियां-सी सुना रही हैं
मैं दोस्तों और साथियों में घिरा हुआ हूं

---

१. निर्मल २. गुलाबी ३. भौहों की ४. धनुष के ५. जेल के वातावरण में

मुसर्रतों के गुलाब हर सिम्त[1] खिल रहे हैं
तुम्हारी आँखों के फूल गोया महक रहे हैं

मुझे गिरफ़्तार करके जब जेल ला रहे थे पोलीस वाले
तुम अपने बिस्तर से अपने दिल के
अधूरे ख़्वाबों को लेके बेदार हो गई थीं
तुम्हारी पलकों से नींद अब भी टपक रही थी
मगर निगाहों में नफ़रतों के अज़ीम[2] शोले भड़क उठे थे
तुम्हारी आंखें हिक़ारतों के[3] जहन्नुमों को जगा रही थीं
निज़ामे-ज़ुल्मो-सितम पे[4] बिजली गिरा रही थीं
मेरी मोहब्बत ने अपनी जन्नत का हुस्न देखा
तुम्हारी आंखों पे मेरी नज़रों के प्यार बरसे
मेरी उम्मीदों, मेरी तमन्नाओं ने सदा[5] दी
ये नफ़रतों के अज़ीम मश्अल[6] जलाये रखना
कि ये मोहब्बत के दिल का शोला है जिसकी रंगीन
रोशनी में
हमारे ख़्वाबों के रास्ते जगमगा रहे हैं

तुम्हारी आंखें
जो मेरे सीने में तैरती हैं
कंवल की कलियां जो मेरे दिल में खिली हुई हैं
इन्हीं से दो और आंखें बेदार हो गई हैं

---

१. ओर २. विशाल ३. घृणाओं के ४. अत्याचारपूर्ण व्यवस्था पर ५. आवाज़ ६. बडी मशालें

वो नन्हे-नन्हे चमकते हीरों की नन्ही कनियाँ
जो मेरी आंखों का नूर लेकर तुम्हारे आंचल से झांकती हैं
फिर और आंखें, फिर और आंखें, फिर और आंखें
ये सिलसिला ता-अबद[1] रहेगा
ज़माने की गोद में सितारों के हुस्न की नद्दियां बहेंगी
वो सब तुम्हारी
वो सब हमारी ही आंखें होंगी
हमारी आंखें कि जिन से शोले बरस रहे हैं
मगर वो कल का हसीन दिन देखो कितना नज़दीक
आ गया है
हमारी आँखों से जब बहारें छलक पड़ेंगी।

---

१. अनन्त-काल तक

नींद

(अपने बच्चे के पहले जन्म-दिन पर)

रात ख़ूबसूरत है
नींद क्यों नहीं आती

दिन की ख़श्मगीं[1] नज़रें
खो गईं सियाही में
आहनी[2] कड़ों का शोर
बेड़ियों की झंकारें
क़ैदियों की सांसों की
तुन्दो - तेज़ आवाज़ें
जेलरों की बदकारी
गालियों की बौछारें
बेबसी की ख़ामोशी
ख़ामशी की फ़र्य्यादें
तह-नशीं[3] अंधेरे में
शब की शोख़ दोशीज़ा[4]
ख़ारदार[5] तारों को
पार करके आई है

---

१. क्रोधपूर्ण २. लोहे के बने हुए ३. तहों में पहुँचा हुआ
४. रात की चंचल सुन्दरी ५. कांटेदार

भरके अपने आंचल में
जंगलों की खुशबूएं
ठंडकें पहाड़ों की
मेरे पास लाई है

नीलगूं[१] जवां सीना
नीलगूं जवां बांहें
कहकशां की पेशानी[२]
नोम चांद का[३] जूड़ा
मख़मलीं अंधेरे का
पैरहन[४] लरज़ता है
वक़्त की सियाह ज़ुल्फ़ें
ख़ामशी के शानों पर[५]
ख़म-ब-ख़म महकती हैं
और ज़मीं के होंटों पर
नर्म शबनमी बोसे
मोतियों के दांतों से
खिलखिला के हंसते हैं
रात ख़ूबसूरत है
नींद क्यों नहीं आती

---

१. नीलिमामय २. आकाश-गंगा का माथा ३. आधे चांद का ४. लिबास ५. चुप्पी के कंधों पर

रात पेंग लेती है
चांदनी के झूले में
आस्मान पर तारे
नन्हे-नन्हे हाथों से
बुन रहे हैं जादू सा
झींगरों की आवाज़ें
कह रही हैं अफ़साना[1]
दूर जेल के बाहर
बज रही है शहनाई
रेल अपने पहियों से
लोरियाँ सुनाती है
रात खूबसूरत है
नींद क्यों नहीं आती

रोज़ रात को यूंही
नींद मेरी आँखों से
बेवफ़ाई करती है
मुझको छोड़कर तनहा
जेल से निकलती है
बम्बई की बस्ती में
मेरे घर का दरवाज़ा
जाके खटखटाती है

---

१. कहानी

एक नन्हे बच्चे की
अंखड़ियों के बचपन में
मीठे-मीठे ख़्वाबों का
शहद घोल देती है
नर्म-नर्म गालों को
गर्म-गर्म आँखों को
झुक के प्यार करती है
एक हसीं परी बनकर
लोरियां सुनाती है
पालना हिलाती है।

अनाज

मेरी आशिक़ हैं किसानों की हसीं कन्यायें
जिनके आंचल ने मोहब्बत से उठाया मुझको
खेत को साफ़ किया, नर्म किया मिट्टी को
और फिर कोख में धरती की सुलाया मुझको
ख़ाक-दर-ख़ाक हर इक तह में टटोला लेकिन
मौत के ढूंढते हाथों ने न पाया मुझको
ख़ाक से लेके उठा मुझको मेरा ज़ौके-नुमू[1]
सब्ज़ कोंपल ने हथेली में छुपाया मुझको
मौत से दूर मगर मौत की इक नींद के बाद
जुंबिशे - बादे - बहारी ने[2] जगाया मुझको
बालियां फूलीं तो खेतों पे जवानी आई
इन परीज़ादों ने बालों में सजाया मुझको
मेरे सीने में भरा सुर्ख़ किरन ने सोना
अपने झूले में हवाओं ने झुलाया मुझको
मैं रकाबी में, पियालों में महक सकता हूं
चाहिये बस लबो-रुख़्सार का साया[3] मुझको

मेरी आशिक़ हैं किसानों की हसीं कन्यायें
गोद से उनकी कोई छीन के लाया मुझको

---

१. पनपने की प्रवृत्ति २. वसन्त ऋतु के पवन की थरथराहट ने
३. होंटों और कपोलों की छत्रछाया

हवसे-ज़र ने[1] मुझे आग में फूंका है कभी
कभी बाज़ार में नीलाम चढ़ाया मुझको
क़ैद रक्खा कभी लोहे में कभी पत्थर में
कभी गोदामों की क़ब्रों में दबाया मुझको
सी के बोरों में मुझे फेंका है तहख़ानों में
चोर-बाज़ार कभी रास न आया मुझको
वो तरसते हैं मुझे और मैं तरसता हूं उन्हें
जिनके हाथों की हरारत ने[2] उगाया मुझको

क्या हुए आज मेरे नाज़ उठाने वाले ?
हैं कहां क़ैदे-ग़ुलामी से बचाने वाले ?

---

१. धन की लोलुपता ने २ गर्मी ने

शादी का दिन

सफ़ेद बादल
लरज़ते आंचल
बुलंदो-बाला[1] हसीन नीलाहटों के सिर से ढलक गये हैं
फ़ज़ा के[2] चेहरे पे मस्त होकर
हज़ारों किरनें बिखर गई थीं
हरे भरे पेड़,
रोशनी,
रोशनी के झूले
हवा की पेंगें
शरीर बच्चों की तरह से पत्तियों की मासूम खिलखिलाहट
ज़मीं को नर्म घास की नन्ही उंगलियां गुदगुदा रही थीं
ये दिन बहुत ही हसीन दिन था
जिसे तुम्हारे हसीन इक़रारे-इश्क़ ने और ख़ूबसूरत बना दिया था
ये दिन इस तरह से सज के फिर आज आ गया है
सफ़ेद हाथों से कोठरी की सियाह सलाख़ों को छू रहा है
वही तबस्सुम, वही तुम्हारा-सा शोख़ अंदाज़े-दिलरुबाई[3]
मगर निगाहों में वो पुरानी चमक नहीं है
कि उसकी आंखों में हल्के हल्के
सियाह हल्क़े पड़े हुए हैं

---

१. ऊंचे २. वातावरण के ३. मन को मोहने का ढंग

एक साल

क़ैद क्या चीज़ है, ज़िंदां की[1] हक़ीक़त क्या है ?
क़ब्र की गोद में सोये हुए साल
तेरी सिमटी हुई ठिठरी हुई परछाईं पर
जेल के भोंकते कुत्तों की सदा[2] रोती है
मैं हिक़ारत से नज़र डाल के हंस देता हूं

ज़हर-आलूद[3] वो बीते हुए लम्हात के[4] डंक
ख़ूं में डूबी हुई वो सुबह की तलवार की धार
शाम की आंख में बारूद के काजल की लकीर
और हफ़्तों के सिपाही वो महीनों के सवार
जो मेरे जोशे-बग़ावत को कुचलने के लिए
फ़ौज-दर-फ़ौज किया करते थे यलग़ार अपनी
मैं उन्हें भी तेरे पहलू में सुला आया हूँ
पहरेदारों की निगाहों से टपकता है लहू
राईफ़ल करती है फ़ौलाद के होंटों से कलाम[5]
गोलियां करती हैं सीसे की ज़ुबां से बातें
और क़ानून वो सर्माये की ज़ंजीरे-गिरां[6]

---

१. जेल की २. आवाज़ ३. विषपूर्ण ४. क्षणों के ५. बातचीत
६. भारी ज़ंजीर

हल्क़े-हल्क़े में[१] लिये अपनी अहिंसा का फ़रेब
अपने दामन को बढ़ाता ही चला जाता है
केंचुली सांप की हर साल बदल जाती है
अद्लो-इन्साफ़ मदारी के पिटारे जिनमें
नाग बैठे हैं क़वानीन के[२] फन फैलाये
और आईन[३] का बैन
अपनी लहरों में छुपा लेता है
तल्ख़ी-ए-ज़हर म[४] डूबी हुई फुंकारों को

फिर भी क़ुर्बानी व ईसार[५] का दिल ज़िंदा है
जहदो-पैकार[६] की नब्ज़ों की धमक जारी है
वक़्तो-तारीख़ की राहों से गुज़रते हैं जुलूस

(२)

चीन में कितनी जवां-साल[७] उमंगों का लहू
हो गया सर्फ़[८] नई सुबह के ग़ाज़े के लिए
और यूनान की आज़ाद हसीनाओं ने
कितने दिल फ़स्ले-बहारां के[९] लिए बोये थे
चश्मे-इस्पेन से[१०] रातों के बरसते आंसू
मुज़्तरिब[११] गौहरो-शबनम में बदलने के लिए
वीतनाम और मलाया के शहीदों का लहू
शफ़क़े-सुर्ख़ के[१२] जलते हुए आईने में

---

१. कड़ी कड़ी में २. क़ानूनों के ३. विधान ४. ज़हर की कटुता में ५. त्याग ६. संघर्ष ७. नौजवान ८. खर्च ९. वसन्त ऋतु के १०. स्पेन की आँख से ११. बेचैन १२. लाल ऊषा के

एक तस्वीरे-हसीं[1] बन के झलक आया है
ख़ाके बरमा ने[2] उगाये हैं वो शोले जिनमें
मुस्कराने के लिये है बेताब
चांद सूरज के कंवल, फ़स्ले-बहारां के गुलाब
और तिलंगाने की नज़रों से बरसती हुई आग
दौड़ती है ख़सो-ख़ाशाके-ग़ुलामी के[3] लिए
रूहे-बंगाल के ज़ख़्मों को मिली हैं आंखें
दर्दो-फ़र्याद ने नारों की ज़बां पाई है
गोशे-गोशे से उबलते हुए सैलाब का जोश
ज़र्रे-ज़र्रे से निकलते हुए अनवार का रक़्स[4]
मौत का कर्ब[5], ग़ुलामी का भयानक चेहरा
जागते और उभरते हुए इन्सां का जलाल
क़ैद क्या चीज़ है ज़िंदां की हक़ीक़त क्या है ?

(३)

रोज़ो-शब[6] क्या हैं ?
फ़क़त[7] संगे-निशां[8] राहों के
माहो-साल[9] बजुज़[10] गर्दे-सफ़र कुछ भी नहीं
जेल हर गाम पे[11] आती है गुज़र जाती है

---

१. सुन्दर चित्र २. बरमा की मिट्टी (धरती) ने ३. गुलामी के तिनकों के ४. प्रकाश का नृत्य ५. पीड़ा ६. रात दिन ७. केवल ८. मार्ग-चिह्नों की शिलायें ९. महीने और साल (समय) १०. सिवाय ११. क़दम पर

वादियां मिलती हैं ग़फ़लत की, मुसीबत के पहाड़
भूख और प्यास के सहराओं में दिल जलते हैं
ख़ून के खौलते दरिया में उबलती है हयात[1]
गर्म सीनों के पुरख़ार[2] बियाबानों में
नक़्शे-पा[3] सुर्ख़ लकीरों में बदल जाते हैं
कारवां मंज़िले-मक़्सूद की जानिब है रवां
नज़रें पलकों से उठाती हैं मनाज़र की[4] नक़ाब
ख़्वाब जाग उठते हैं चेहरों के गुलिस्तां लेकर

(४)

मुझको तनहाई का एहसास नहीं है कि यहां
कितनी नौख़ेज़[5] उमंगें हैं मेरे साथ असीर[6]
कितने कुहसार की आग़ोश के[7] पाले हुए लाल
कितने खेतों के सपूत
कितने रेलों के, मशीनों के चलाने वाले
कितने बोसों की महक; कितनी ही जुल्फ़ों की शिकन
कितनी बहनों की उम्मीदों के कंवल
कितनी माओं की मुरादों के चिराग़
कितने दरियाओं के तूफ़ान, हवा के झोंके
कितनी हड़तालों के टूटे हुए हाथ
कितने एहसासे-बग़ावत के उभरते परचम[8]

---

१. जीवन २. कांटे भरे हुए ३. पद-चिह्न ४. दृश्यों की
५. तरुण ६. क़ैद ७. पहाड़ की गोद के ८. झंडे

जितने ऊंचे हैं मुसीबत के पहाड़
हिम्मतें उतनी ही बेबाको-सरअफ़राज़ो-बुलंद[1]
हौसले हैं कि हिमालय के उक़ाबों की[2] उड़ान
जिनके शहपर की[3] हवा बर्फ़ की आंधी बनकर
आस्मानों की बुलंदी से गुज़र जाती है
और वो बूढ़े, वो जहांदीदा[4] रफ़ीक़[5]
झुर्रियां जिनकी हैं तारीखे-हवादिस के वरक़[6]
हंसती आंखों की चमक, नर्म तबस्सुम की शिकन
तन्ज़[7] है तर्ज़े-हुकूमत की[8] सितमकारी[9] पर
इनके बालों की सफ़ेदी यह ख़बर देती है
कि शबे-तारे-ग़ुलामी की सहर[10] दूर नहीं
और वो शोला-नफ़स[11] शायरो-अफ़साना-निगार
अपने नग़मों की हरारत से[12] गला देते हैं
रूह के बोझ को, अफ़कार की[13] ज़ंजीरों को
उनका हर शेर रजज़[14] पढ़ता है
हर सतर कहती है जुर्रत की कहानी हमसे
उनके हर गीत से दिल हिलता है दीवारों का
जैसे बढ़ती हुई फ़ौजों की धमक
शोले आवाज़ के इस शान से होते हैं बुलंद

---

१. निडर और उच्च (महान) २. गरुड़ों की ३. पंखों की ४. अनुभवी ५. साथी ६. दुर्घटनाओं के इतिहास के पन्ने ७. व्यंग ८. शासन-व्यवस्था की ९. अत्याचार १०. गुलामी की अंधेरी रात की सुबह ११. जिनके श्वासों के साथ आग निकलती है १२. गर्मी से १३. चिन्ताओं की १४. युद्ध-क्षेत्र में पढ़ी जाने वाली वीर-रस की कविता

आग लग जाती है ज़िंदां के सियाख़ाने में[1]
और मंज़िल को जबीं[2] वक़्त की मेहराबों में
जगमगा उठती है रंगीन शुआओं की[3] तरह
मेरे एहसासो-तसव्वुर[4] को हज़ारों सूरज
लाखों चांद और करोड़ों तारे
रंग और नूर की बारिश में भिगो देते हैं

हम-सफ़र[5] ये हों तो फिर अज़्मे-सफ़र[6] क्या कहना !
रंगे-शब[7] ये हो तो फिर रंगे-सहर[8] क्या कहना !!

---

१. अंधेरे घर में २. माथा ३. किरणों की ४. अनुभूति और कल्पना ५. हमराही ६. सफर का संकल्प ७. रात का रंग ८. सुबह का रंग

भूखी मां भूखा बच्चा

मेरे नन्हे, मेरे मासूम, मेरे नूरे-नज़र[1]
आ कि मां अपने कलेजे से लगा ले तुझ को
अपनी आग़ोशे-मोहब्बत में[2] सुला ले तुझ को
तेरे होंटों का ये जादू था कि सीने से मेरे
नद्दियाँ दूध की बह निकली थीं
छातियां आज मेरी सूख गई हैं लेकिन
आंखें सूखी नहीं अब तक मेरे लाल
दर्द का चश्मा-ए-बेताब रवां है[3] इन से
मेरे अश्कों[4] ही से तू प्यास बुझा ले अपनी
सुनती हूं खेतों में अब नाज नहीं उग सकता
कांग्रेस राज में सोना ही फला करता है
गाय के थन से निकलती है चमकती चांदी
और तिजोरी की दराज़ों में सिमट जाती है

चांद से दूध नहीं बहता है
तारे चावल हैं न गेहूं न जवार
वर्ना मैं तेरे लिये चांद सितारे लाती
मेरे नन्हे, मेरे मासूम, मेरे नूरे-नज़र

---

१. आंखों की ज्योति (पुत्र) २. प्रेम भरी गोद में ३. बह रहा है
४. आंसुओं

आ कि मां अपने कलेजे से लगा ले तुझ को
अपनी आग़ोशे-मोहब्बत में सुला ले तुझ को

सो जा मेरी मोहब्बत की कली
मेरी जवानी के गुलाब
मेरे इफ़लास के[1] हीरे सो जा
नींद में आयेंगी हंसती हुई परियाँ तेरे पास
बोतलें दूध की शर्बत के कटोरे लेकर

जाने आवाज़ की लोरी थी कि परियों का तलिस्म[2]
नींद-सी आने लगी बच्चे को
खिंच गई नीलगूं[3] होंटों पे खमोशी की लकीर
मुट्ठियां खोल दीं और मूंद लीं आंखें अपनी
यूं ढलकने लगा मनका जैसे
शाम के ग़ार में सूरज गिर जाये

झुक गई मां की जबीं[4] बेटे की पेशानी पर[5]
अब न आंसू थे, न सिसकी थी, न लोरी न कलाम[6]
एक सन्नाटा था
एक सन्नाटा था तारीको-तवील[7] ।

---

१. निर्धनता के २. जादू ३. नीलिमामय ४. माथा ५. माथे पर ६. बातचीत ७. अन्धकारपूर्ण और दीर्घ

शाहराहे-हयात[1]

य आदमी की गुज़रगाह[2] —शाहराहे-हयात
हज़ारों साल का बारे-गिराँ[3] उठाये हुए
जबीं पे[4] कातिबे-तारीख़ की[5] जली[6] तहरीर[7]
गले से सैंकड़ों नक़्शे-क़दम[8] लगाये हुए
गुज़रते वक़्त के गर्दो-ग़ुबार के[9] नीचे
हसीन[10] जिस्म को ताबिंदगी[11] छुपाये हुए
गुज़श्ता दौर की[12] तहज़ीब के मनाज़िल को[13]
जवान माँ की तरह गोद में सुलाये हुए

ये आदमी की गुज़रगाह—शाहराहे हयात
हज़ारों साल का बारे-गिराँ उठाये हुए
इधर से गुज़रे हैं चंगेज़ो-नादिरो-तैमूर
लहू में भीगी हुई मशअ़लें जलाये हुए

---

१. जीवन का राजपथ २. मार्ग ३. भारी बोझ ४. माथे पर ५. इतिहास-लेखक की ६. मोटे अक्षरों की ७. लिखावट ८. पदचिह्न ९. धूल-मिट्टी के १०. सुन्दर ११. आभा १२. गत ज़माने की १३. मंज़िलों को

गुलामों और कनीज़ों के कारवां आये
ख़ुद अपने ख़ून में डूबे हुए नहाए हुए
शिकस्ता[1] दोश पे[2] दीवारे-चीन को लादे
सिरों पे मिस्र के अहराम को उठाए हुए
जलाले-शेखो - शिकोहे - ब्रह्मनी के[3] जलूस
हवस के[4] सीनों में आतिशकदे[5] छुपाये हुए
जहालतों की तवील और अरीज़[6] परछाईं
तवाहमात की[7] तारीकियां[8] जगाये हुए
सफ़ेद क़ौम के अय्यार[9] ताजिरों के गिरोह
फ़रेबो - मक्र से अपनी दुकां सजाये हुए
शिकस्त-ख़ुर्दा[10] सियासी गदागरों के[11] हुजूम
अदब से टूटी हुई गर्दनें झुकाये हुए
ग़मों से चूर मुसाफ़िर, थके हुए राही
चिराग़ रूह के, दिल के कंवल बुझाये हुए
ये आदमी की गुज़रगाह—शाहराहे हयात
हज़ारों साल का बारे-गिरां उठाये हुए
नये उफ़क़ से[12] नये क़ाफ़िलों की आमद[13] है
चिराग़े-वक़्त की[14] रंगीन लौ बढ़ाए हुए

---

१. टूटे हुए २. कंधे पर ३. मुल्ला और पंडित के तेज और प्रताप के ४. लोलुपता के ५. अग्नि-कुंड ६. लम्बी-चौड़ी ७. भ्रमों की ८. अंधेरे ९. धोखेबाज़ १०. परास्त ११. भिखारियों के १२. क्षितिज से १३. आगमन १४. समय के चिराग़ की

बग़ावतों की सिपह[1] इन्क़िलाब के लश्कर
ज़मीं पे पाँव फ़लक[2] पर नज़र जमाये हुए
ग़रूरे-फ़तह के[3] परचम[4] हवा में लहराते
सबातो-अ़ज़्म के[5] ऊँचे अलम[6] उठाये हुए
हथेलियों पे लिये आफ़ताब और महताब[7]
बग़ल में कुर्रहे - अर्ज़े - हसीं[8] दबाये हुए
उठो और उठके उन्हीं क़ाफ़िलों में मिल जाओ
जो मंज़िलों को हैं गर्दे-सफ़र बनाये हुए
क़दम बढ़ाये हुए ऐ मुजाहिदाने - वतन[9]
मुजाहिदाने - वतन हाँ क़दम बढ़ाये हुए

---

१. सेना २. आकाश ३. विजय के घमंड के ४. झंडे ५. स्थायित्व और दृढ़ता ६. झंडे ७. सूरज और चांद ८. सुन्दर धरती ९. देश-भक्तो !

खूनी हाथ

ये वही हाथ हैं सफ़्फ़ाको-दराज़[1]
हां वही हाथ सितम-पेशा[2] व चालाको-ज़लील
मेरे पहचाने हुए और तेरे पहचाने हुए
वो जो मग़रिब के सियह-पोश उफ़क़ से निकले
आग मशरिक़ की बहारों में लगाने के लिए
आज भी मेरे हसीं देस में बल खाते हैं
आस्तीनों में छुपा लेते हैं बम ऐटम के
खोशे गेहूँ के[3] हथेली पे सजा लाते हैं

हां वही हाथ कड़कते हुए कोड़ों की तरह
ज़ख्म हर पीठ पे हर जिस्म पे बरसाते हुए
या किसी टूट के गिरती हुई बिजली की तरह
बाग़ पर, खेतों पे, खलियानों पे लहराते हुए
ज़ुल्म की तरह निडर, रात की मानिंद तवील[4]
कोढ़ की तरह सफ़ेद
खश्मगीं[5] , जैसे जहन्नुम में दहकती हुई आग
गर्म तलवार की मानिंद कलेजों पे रवां[6]
माओं के दूध भरे सीनों पे बैठे हुए नाग

---

१. क्रूर और लम्बे २. अत्याचारी ३. गेहूँ की बालें ४. रात की भांति लम्बे ५. क्रुद्ध ६. चलायमान

कैसे भूलूं कि वही हाथ वही सांप हैं ये
डस चुके हैं जो मोहब्बत को, तमन्नाओं को
जिनकी फुंकारों ने बिस[1] घोल दिया पानी में
जिनकी परछाईं ने झुलसा दिया सहराओं को[2]

हां वही हाथ वही ख़ून में डूबे हुए हाथ
क़त्लो-ग़ारत[3] के इरादों ने जना है[4] जिनको
असलहा-साज़[5] मशीनों के तराशे हुए हाथ
मौत का रूप मुनाफ़अ ने दिया है जिनको

आह ! इन हाथों से मैं हाथ मिलाऊं क्योंकर
अपनी नफ़रत को, हिक़ारत[6] को, छुपाऊ क्योंकर

तोड़ दो, काट दो, या आग लगा दो इनको
बन पड़े जैसे भी गर्दन से हटा दो इनको ।

---

१. विष २. मरुस्थलों को ३. हत्या और विनाश ४. उत्पन्न किया है ५. हथियार बनाने वाली ६. घृणा

हुस्ने-कश्मीर[1]

आबाद है ख़्वाबों की तरह वादिये-कश्मीर[2] ,
फ़ानूस हैं तारों के तो फूलों के चिराग़ां[3] ।
दामन[4] में पहाड़ों के लटकती हैं बहारें,
पत्थर की हथेली पे महकता है गुलिस्तां ।
सन्तूर[5] बजाती हुई फिरती हैं हवाएं,
हर बाग़ में आवारा-ओ-सरमस्तो-ग़ज़लख्वां[6]।
उड़ती हुई आती हैं परिस्ताने-उफ़क़ से[7] ,
मलबूसे-शफ़क़[8] पहने हुए सुबह की परियां ।
झीलें हैं कि नीलम के तराशे हुए प्याले,
फ़ौवारे हैं या गौहर-ओ-अल्मास[9] हैं रक़्सां[10]।
'शाली'[11] के हैं ये खेत कि सब्ज़े के समुन्दर,
साये हैं चनारों के कि जन्नत के शबिस्तां[12]।
दोशीज़ा-ए-कुहसार[13],पहाड़ों की ग़िज़ाला[14],
बिन्ते-महो-खुरशीद[15] है हर दुख्तरे-दहक़ां[16]।

---

१. कश्मीर का सौन्दर्य २. कश्मीर की घाटी ३. दीपमाला ४. आंचल ५. कश्मीर का सर्वप्रिय बाजा ६. आवारा, मस्त और संगीत-पूर्ण ७. क्षितिज के परिस्तान से ८. ऊषा-रूपी वस्त्र ९. मोती और हीरे १०. नृत्य कर रहे हैं ११. कश्मीरी भाषा में धान को 'शाली' कहते हैं १२. शयनागार १३. पहाड़ों की सुन्दरी १४. हरिणी १५. चांद-सूरज की बेटी १६. किसान की बेटी

जो छीन ले दिल वो हुनरे-दस्ते-हुनरमंद[1] ,
अनमोल मगर जिन्स के बाज़ार में अर्ज़ां[2] ।
इखलासो-मोहब्बत[3] की वो गूंधी हुई मट्टी,
अखलाक़ो-मुरौवत[4] के वो ढाले हुए इन्सां ।
शायर को यक़ीं है कि निखर आएगा इकरोज़,
वो हुस्न जो इफ़लास[5] की चादर में है पिनहां[6]।

---

१. कला-कौशल-युक्त हाथों द्वारा निर्मित हस्तकला की वस्तुएं
२. सस्ती ३. स्नेह ४. शिष्टाचार, सदाचार, आपसदारी
५. निर्धनता ६. छुपा हुआ

एक याद

फूल थे सुर्ख, बहारें थीं जवां
वो महकती हुई बातें, वो महकते हुए होंट
वो तबस्सुम[1] कि शफ़क़[2] शर्माये
क़हक़हे, रागनी जिस तरह फ़िज़ा में[3] लहराये
जिस्म पाकीज़ा-ओ-शादाबो-जवां[4]
चान्दनी जैसे मुजस्सम[5] हो जाये

ऐसे ही हुस्न से यूनान के फ़नकारों ने[6]
अपनी वीनस के तसव्वुर[7] को तराशा होगा
ऐसे ही हुस्न के चेहरे से तख़य्युल[8] लेकर
अहदे-पारीना के[9] नक़्क़ाशों ने[10]
अपने ख़्वाबों की अजन्ता को संवारा होगा

वो समुन्दर का किनारा, वो चमकती हुई रेत
मौजें[11] पिघले हुए नीलम की तलिस्मी[12] परियाँ
रक़्स[13] करती हुई आती थीं तेरे क़दमों में
और फिर रेत में खो जाती थीं
डूबती शाम के सूरज की सुनहरी किरनें

---

१. मुस्कराहट २. ऊषा ३. वातावरण में ४. पवित्र, सुसिक्त और युवा ५. साकार ६. कलाकारों ने ७. प्रणिधान ८. कल्पना ९. प्राचीन काल के १०. चित्रकारों ने ११. लहरें १२. जादूई १३. नृत्य

तेरे काकुल[1] , तेरे रुख़्सार पे[2] सो जाती थीं
और हवायें तेरे आंचल को, तेरे शानों को[3]
शौक़ से चूम के दीवानी सी हो जाती थीं
और मैं अपने रक़ीबों पे हंसा करता था ।

---

१. केशपाश २. कपोलों पर ३. कंधों को

हुस्ने-नातमाम[1]

किस क़दर शादाबो-दिलकश[2] है वो हुस्ने-नातमाम,
जिसकी फ़ितरत गुन्चगी[3], दोशीज़गी[4] है जिसका नाम।
जिस तरह पिछले पहर का साफ़ो-पाकीज़ा उफ़क़[5],
जिसके सीने से अभी पहली किरन फूटी नहीं।
जिस तरह इक खिलने वाली नाशगुफ़्ता[6] सी कली,
जिसके दामन तक अभी बादे-सहर[7] पहुंची नहीं।
बर्गे-गुल[8] पर जिस तरह शबनम की इक नन्ही सी बूंद,
जो शुआ - ए - महरे - ताबां से[9] अभी उलझी नहीं।
जिस तरह साग़र में[10] सहबा[11] जैसे मीना में[12] शराब,
जो अभी मचली नहीं, छलकी नहीं, उबली नहीं।
जिस तरह इक शोख़ बिजली बादलों की आड़ में,
जो अभी तड़पी नहीं, चमकी नहीं, टूटी नहीं।
जिस तरह गेसू-ए-पेचां[13] जैसे ज़ुल्फ़े-ख़म-ब-ख़म[14],
जो अभी खुलकर हवा के दोश पर[15] महकी नहीं।

---

१. अपूर्ण सौन्दर्य २. मनोहर ३. कली की-सी प्रकृति ४. कौमार्य ५. स्वच्छ तथा पवित्र क्षितिज ६. बिन खिली ७. प्रभात-समीर ८. फूल की पत्ती ९. प्रकाशमान सूरज की किरन से १०. प्याले में ११. शराब १२. सुराही में १३-१४. पेचदार केश १५. कंधे पर

जिस तरह दरिया में मोती, जैसे मौजों में सदफ़[1],
चश्मे-इन्सां ने[2] अभी जिनकी चमक देखी नहीं।
जैसे ज़हने-पाके-शायर में[3] तख़य्युल की[4] परी,
जो अभी तक शीशा-ए-अल्फ़ाज़ में[5] उतरी नहीं।
जिस तरह आंखों में हल्के से तबस्सुम की[6] झलक,
जो किरन बनकर लबो-रुख़्सार पर[7] बिखरी नहीं।
अब तलक यूंही अछूता है वो हुस्ने-नातमाम,
जिसकी फ़ितरत गुन्चगी, दोशीज़गी है जिसका नाम।
लेकिन इक दिन हर सदफ़ को टूट जाना चाहिये।
हर कली को फूल बनकर मुस्कराना चाहिये॥

---

१. सीप २. मानव नेत्रों ने ३. शायर के पवित्र मस्तिष्क में ४. कल्पना की ५. शब्दों के शीशे (बोतल या सुराही) में ६. मुस्कराहट ७. होंटों और कपोलों पर

जेल की रात

पहाड़ सी रात
उदास तारे, थके मुसाफ़िर
घना अन्धेरा, स्याह जंगल
जहां सलाखें उगी हुई हैं
अज़ीयतों के[1] पुराने इफ़रीत[2] कैदियों को निगल रहे हैं
खमोशी सहमी हुई खड़ी है
स्याही अपने स्याह दांतों से रोशनी को चबा रही है
उचाट नींदों के नाग आंखों को डस रहे हैं
मैं छिद रहा हूं हज़ार कांटों से अपनी बेचैन करवटों में
ये रात भी कल की रात की तरह अपनी सफ़्फ़ाकियों को[3] लेकर
उफ़क़[4] के उस पार जा छुपेगी
मगर मुझे डस नहीं सकेगी
मेरी निगाहों में मेरी महबूब[5] तेरी सूरत रची हुई है
ये चांद मेरी हसीन यादों के आस्मां पर खिला हुआ है
तेरे तसव्वुर से मेरे सीने में चांदनी है।

---

१. कष्टों के २. राक्षस ३. क्रूरताओं को ४. क्षितिज ५. प्रेयसी

मेरा सफ़र

फिर इक दिन ऐसा आयेगा
आंखों के दिये बुझ जायेंगे
हाथों के कंवल कुम्हलायेंगे
और बर्ग-ज़बां से[१] नुत्क़ो-सदा[२]
की हर तितली उड़ जायेगी
इक काले समुन्दर की तह में
कलियों की तरह से खिलती हुई
फूलों की तरह से हँसती हुई
सारी शक्लें खो जायेंगी
खून की गर्दिश[३] दिल की धड़कन
सब रागनियां सो जायेंगी
और नीली फ़ज़ा की[४] मखमल पर
हँसती हुई हीरे की ये कनी
ये मेरी जन्नत, मेरी ज़मीं
इसकी सुबहें, इसकी शामें
बे-जाने हुए बे-समझे हुए
इक मुश्ते-गुबारे-इन्सां पर[५]

---

१. जबान रूपी पत्ते से २. वाक्-शक्ति तथा शब्द ३. दौरा
४. वायुमंडल ५. मुट्ठी-भर मनुष्य रूपी मिट्टी पर

शबनम की तरह रो जायेंगी
हर चीज़ भुला दी जायेगी
यादों के हसीं[1] बुतख़ाने से
हर चीज़ उठा दी जायेगी
फिर कोई नहीं ये पूछेगा
'सरदार' कहां है महफ़िल में

लेकिन मैं यहां फिर आऊंगा
बच्चों के दहन[2] से बोलूंगा
चिड़ियों की ज़बां से गाऊँगा
जब बीज हँसेंगे धरती में
और कोंपलें अपनी उँगली से
मिट्टी की तहों को छेड़ेंगी
मैं पत्ती-पत्ती, कली-कली
अपनी आंखें फिर खोलूंगा
सरसब्ज़ हथेली पर लेकर
शबनम के क़तरे तोलूंगा
मैं रंगे-हिना[3], आहंगे-ग़ज़ल[4]
अन्दाज़े-सुख़न[5] बन जाऊंगा
रुख़सारे-उरूसे-नौ की[6] तरह
हर आंचल से छन जाऊंगा
जाड़ों की हवायें दामन में

---

१. सुन्दर २. मुंह ३. महंदी का रंग ४. गज़ल का आलाप
५. शेर कहने या बात कहने का ढंग ६. नई दुल्हन के कपोल की

जब फ़स्ले-खिज़ां को[1] लायेंगी
रहरौ[2] के जवां क़दमों के तले
सूखे हुए पत्तों से मेरे
हँसने की सदायें[3] आयेंगी
धरती की सुनहरी सब नदियां
आकाश की नीली सब झीलें
हस्ती से मेरी भर जायेंगी
और सारा ज़माना देखेगा
हर क़िस्सा मेरा अफ़साना है
हर आशिक़ है 'सरदार' यहां
हर माशूक़ा 'सुल्ताना'[4] है
मैं एक गुरेज़ां लम्हा[5] हूँ
अय्याम के अफ़सूँ ख़ाने में[6]
मैं एक तड़पता क़तरा हूँ
मसरूफ़े-सफ़र[7] जो रहता है
माज़ी की[8] सुराही के दिल से
मुस्तक़बिल के[9] पैमाने में
मैं सोता हूं और जागता हूं
और जाग के फिर सो जाता हूं
सदियों का पुराना खेल है ये
मैं मर के अमर हो जाता हूं।

---

१. पतझड़ २. पथिक ३. आवाज़ें ४. कवि की पत्नी का नाम ५. भागा हुआ क्षण ६. समय के जादूघर में ७. गतिशील ८. अतीत की ९. भविष्य के

कुछ ग़ज़लें और कुछ शेर

एक जूए-दर्द[1] दिल से जिगर तक रवां है[2] आज,
पिघला हुआ रगों में इक आतिशफ़िशां[3] है आज।
लब[4] सी दिए हैं ता[5] न शिकायत करे कोई,
लेकिन हर-एक ज़ख़्म के मुंह में ज़ुबां है आज।
तारीकियों ने[6] घेर लिया है हयात को[7],
लेकिन किसी का रू-ए-हसीं[8] दर्मियां है आज।
जीने का वक़्त है यही मरने का वक़्त है,
दिल अपनी ज़िन्दगी से बहुत शादमां[9] है आज।
हो जाता हूं शहीद हर अहले-वफ़ा के साथ,
हर दास्ताने-शौक़[10] मेरी दास्तां है आज।
आए हैं किस निशात[11] से हम क़त्ल-गाह में,
ज़ख़्मों से दिल है चूर नज़र गुलफ़िशां[12] है आज।
ज़िन्दानियों ने[13] तोड़ दिया ज़ुल्म का ग़रूर,
वो दबदबा वो रौबे-हुकूमत कहां है आज।

◇ ◇ ◇

---

१. पीड़ा की नदी २. बह रही है ३. ज्वालामुखी ४. होंट
५. ताकि ६. अंधेरों ने ७. जीवन को ८. सुन्दर मुखड़ा ९. प्रसन्न
१०. प्रेम की कहानी ११. आनन्द १२. फूल बखेरती हुई
१३. कैदियों ने

मेरी मोहब्बत की कोई कीमत नहीं है, कोई सिला[1] नहीं है।
मुझे किसीसे कोई शिकायत नहीं है कोई गिला नहीं है॥

मैं अपने मजबूर दिल के हाथों कुछ इतना मजबूर हो गया था।
मैं तुमको अपनी तरह का इन्सां समझ के मसहूर[2] हो गया था॥

खबर न थी पत्थरों के सीने में दिल बनाता रहा हूँ अब तक।
मैं बर्फ़ की सिल पे अपनी चिंगारियाँ लुटाता रहा हूं अब तक॥

मैं गीत गाता रहा हूं हाथों में एक टूटा सितार लेकर।
रहा हूं मैं बेक़रार अक्सर तुम्हें खुद अपना क़रार देकर॥

मेरी मोहब्बत, मेरी अक़ीदत[3] का अब मुझे ये सिला मिला है।
कि मेरे ज़ख्मे-जिगर को मेरे ही तारे-दिल से सिया गया है॥

अगर कोई और मेरे अहदे-वफ़ा का आईनादार होता।
अगर तुम्हारी जगह कोई और दूसरा ग़मगुसार[4] होता॥

तो मैं उसे अपनी रूह से अपने दिल से बाहर ढकेल देता।
मैं उसके सिर पर हिक़ारतों के[5] जहन्नुमों को उँडेल देता॥

मगर मैं अब तुमको क्या कहूँ, मेरी रूहो दिल का सरूर हो तुम।
मुझे अंधेरा भी दो तो खुश हूँ कि मेरी आँखों का नूर हो तुम॥

◇ ◇ ◇

---

१. मूल्य, प्रतिफल २. मंत्र-मुग्ध ३. श्रद्धा ४. सहानुभूति प्रकट करने वाला ५. घृणाओं के

फिर वही गलियां वही अगला तवाफ़े-कूए-यार[1] ।
इश्क़ को मुज़दा[2] कि फिर सामाने-रुसवाई है[3] आज ।।

कौन है जिस से संभाला जायेगा मेरा जुनूं[4] ।
खुद ही पाये-शौक़ को[5] ज़ंजीर पहनाई है आज ।।

डर रहा हूं जानो-तन को फूंक डालेगी ये आग ।
मेरे सीने में जो ज़ब्ते-ग़म ने[6] भड़काई है आज ।।

कह दो सय्यादों से[7] गुलचीनों को करदो होशियार ।
फ़स्ले-गुल ने[8] दूर तक ज़ंजीर फैलाई है आज ।।

एक साहिल है कि उभरा है भँवर की गोद से ।
एक किश्ती है कि तूफ़ानों से टकराई है आज ।।

जल उठा नब्ज़ों में खूं रोशन हुए दिल में चिराग़ ।
शायरे-आतिश-नवा ने[9] आग बरसाई है आज ।।

◇ ◇ ◇

---

१. यार की गली के चक्कर २. मंगल सूचना ३. बदनाम होने के साधन जुट गये हैं ४. उन्माद ५. इश्क़ के पाँव को ६. ग़म को दबाने ने ७. शिकारियों से ८. वसन्त ऋतु ने ९. अग्नि-भाषी शायर ने

तुम्हारे एजाज़े-हुस्न की[1] मेरे दिल पे लाखों इनायतें[2] हैं।
तुम्हारी ही देन मेरे ज़ौक़े-नज़र की[3] सारी लताफ़तें[4] हैं॥

जवां है सूरज, जबीं पे जिसके तुम्हारे माथे की रोशनी है।
सहर हसीं है कि उसके रुख़ पर[5] तुम्हारे रुख़ की सबाहतें[6] हैं॥

मैं जिन बहारों की परवरिश कर रहा हूं ज़िन्दाने-ग़म[7] में हमदम[8]।
किसी के गेसू-ओ-चश्मो-रुख़सारो-लब[9] की रंगीं हिकायतें[10] हैं॥

न जाने छलकाये जाम कितने, न जाने कितने सुबू उछाले।
मगर मेरी तिश्नगी[11] कि अब भी तेरी नज़र से शिकायतें हैं॥

मैं अपनी आंखों में सैले-अश्के-रवां[12] नहीं बिजलियां लिये हूं।
जो सर-बुलंद और ग़यूर[13] हैं अहले-ग़म[14] ये उनकी रिवायतें[15] हैं

मैं रात की गोद में सितारे नहीं शरारे[16] बखेरता हूं।
सहर[17] के दिल में जो अपने अश्कों से बो रहा हूं बग़ावतें हैं॥

◇ ◇ ◇

---

१. सुन्दरता के चमत्कार की २. कृपायें ३. दृष्टि के सुन्दर स्तर की ४. मृदुलतायें ५. मुखड़े पर ६. सुन्दरतायें ७. दुखपूर्ण कारागार ८. मित्र, साथी ९. केश, नयन, गाल और होंट १०. कहानियां ११. पिपासा १२. बहते हुए आंसुओं का तूफ़ान १३. मनस्वी १४. पीड़ित १५. परम्पराएं १६. चिंगारियां १७. प्रभात

कमनिगाहों[१] को मैं अंदाज़े-नज़र[२] देता हूं,
बेसहर[३] रात को भी रंगे - सहर[४] देता हूं,
बदगुमां मुझसे ख़िज़ां है तो ख़फ़ा वीराना,
आमदे - फ़स्ले - बहारां की[५] ख़बर देता हूँ।

◇ ◇ ◇

मोहब्बत इक तड़प है आरज़ू इक कैफ़ियत[६] दिल की।
तेरी आंखों में आकर जाविदां[७] मालूम होती है॥

क़दम रुकते नहीं हैं जादा - ए - राहे - तमन्ना[८] में।
कि नाकामी भी इक संगे-निशां[९] मालूम होती है॥

कहीं बिजली गिरे वो अपना गुलशन हो कि औरों का।
मुझे अपनी ही शाखे - आशियां[१०] मालूम होती है॥

◇ ◇ ◇

शिकायते - ग़मे - गेती[११] है ज़िन्दगी की दलील।
गुज़रने दे जो उन्हें नागवार गुज़रे हैं॥

हयात सख़्त सही पर गुज़र नहीं मुश्किल।
कि संगे - सख़्त[१२] के दिल से शरार[१३] गुज़रे है॥

◇ ◇ ◇

---

१. कम नज़र वालों (हठबुद्धियों) को २. देखने का ढंग ३. ऐसी रात जिस की सुबह न हो ४. सुबह का रंग ५. वसन्त ऋतु के आगमन की ६. अवस्था ७. अमर ८. इच्छा के मार्ग की मंज़िल ९. मार्ग-शिला १०. घोंसले वाली शाखा ११. सांसारिक दुखों की शिकायत १२. सख़्त पत्थर १३. चिंगारी

इश्क़ का नग़मा जुनूं के साज़ पर गाते हैं हम।
अपने ग़म की आंच से पत्थर को पिघलाते हैं हम॥

जाग उठते हैं तो सूली पर भी नींद आती नहीं।
वक़्त पड़ जाये तो अंगारों पे सो जाते हैं हम॥

ज़िन्दगी को हमसे बढ़कर कौन कर सकता है प्यार।
और अगर मरने पे आजायें तो मर जाते हैं हम॥

दफ़न होकर ख़ाक में भी दफ़न रह सकते नहीं।
लाला-ओ-गुल[1] बन के वीरानों पे छा जाते हैं हम॥

हम कि करते हैं चमन में एहतमामे-रंगो-बू[2]।
रू-ए-गेती[3] से नक़ाबे-हुस्न[4] सरकाते हैं हम॥

अक्स[5] पड़ते ही संवर जाते हैं चेहरे के नुक़ूश[6]।
शाहिदे-हस्ती[7] को यूं आईना दिखलाते हैं हम॥

मैकशों को मुज़दा[8] सदियों के प्यासों को नवेद[9]।
अपनी महफ़िल अपना साक़ी लेके अब आते हैं हम॥

◇ ◇ ◇

१. फूल २. रंग और सुगन्धि का प्रबंध ३. सृष्टि के मुख पर से ४. सौन्दर्य का पर्दा ५. प्रतिबिम्ब ६. नैन-नक्श ७. जीवन रूपी प्रेयसी ८,९. मंगल-सूचना

वुफ़ूरे - शौक़ की[1] रंगीनियां मत पूछ।
लबों का प्यार, निगह की शिकायतें मत पूछ॥

किसी निगाह की नस नस में तैरते कांटे।
वो इब्तदाये-मोहब्बत की[2] राहतें[3] मत पूछ॥

हुजूमे-ग़म ने तो जीना सिखा दिया हमको।
ग़मे - जहां[4] की हैं क्या-क्या इनायतें मत पूछ॥

◇ ◇ ◇

दिल की आग जवानी के रुख्सारों को[5] दहकाये है।
बहे पसीना मुखड़े पर या सूरज पिघला जाये है॥

मन इक नन्हा-सा बालक है हुमक-हुमक रह जाये है।
दूर से मुख का चाँद दिखाकर कौन इसे ललचाये है॥

तेरा दर्द सलामत है तो मरने की उम्मीद नहीं।
लाख दुखी हों, ये दुनिया रहने की जगह बन जाये है॥

◇ ◇

दामन झटक के मंज़िले-ग़म से गुज़र गया,
उठ-उठ के देखती रही गर्दे-सफ़र[6] मुझे।

◇ ◇ ◇

---

१. इश्क़ के आधिक्य की २. प्रेम के प्रारंभ की ३. आनन्द
४. सांसारिक ग़म ५. कपोलों को ६. रास्ते की धूल

ग़म का सितारा

मेरी वादी में[१] वो इक दिन युंही आ निकली थी,
रंग और नूर[२] का बहता हुआ धारा बनकर।
महफ़िले-शौक़ में[३] इक धूम मचा दी उसने,
ख़लवते-दिल में[४] रही अंजुमन-आरा[५] बनकर।
शोला-ए-इश्क़[६] सरे-अर्श को[७] जब छूने लगा,
उड़ गई वो मेरे सीने से शरारा बनकर।
और अब मेरे तसव्वुर का[८] उफ़क़[९] रोशन है,
वो चमकती है जहां ग़म का सितारा बनकर।

◇ ◇ ◇

क़तआ

नसीमे-सुबह-तसव्वुर[१०] ये किस तरफ़ से चली,
कि मेरे दिल में चमन दर किनार[११] आती है।
कहीं मिले तो मेरे गुल-बदन[१२] से कह देना,
तेरे ख़याल से बू - ए - बहार[१३] आती है॥

◇ ◇ ◇

---

१. घाटी में २. प्रकाश ३. इश्क़ की महफ़िल में ४. मन के एकान्त में ५. महफ़िल जुटाने और सजाने वाली ६. इश्क़ का शोला (लपट) ७. सातवें आकाश को ८. कल्पना का ९. क्षितिज १०. कल्पना का प्रभात-समीर ११. वाटिका को बग़ल में लिये १२. फूल ऐसा (नाजुक) शरीर रखने वाली १३. वसन्त ऋतु की महक

झलक

सिर्फ़ लहराके रह गया आँचल,
रंग बनकर बिखर गया कोई।
गर्दिशे-ख़ूं[1] रगों में तेज़ हुई,
दिल को छूकर गुज़र गया कोई।
फूल-से खिल गये तसव्वुर में,
दामने-शौक़[2] भर गया कोई।

◇ ◇ ◇

१. रक्त का संचार २. शौक़ अथवा इश्क़ का दामन